प्रभु यीशु

के

चमत्कारी जीवित वचन

विश्वास के साथ पढ़ने से

मोक्ष प्राप्ति ✓
रोग मुक्ति ✓
मानसिक शाँति ✓
भूतप्रेतों से छुटकारा ✓
व
सामाजिक प्रश्नों के हल ✓

शिष्य थॉमसन

शिष्याश्रम
[Registered under Indian Trust Act, 1882 Reg.no-2401]
305 D/A शीषमहल, शालीमार बाग, नई दिल्ली- 110088
e-mail: jawabjawab@yahoo.com

गुरू नहीं, सनातन सत्गुरू

प्रभु यीशु मसीह इस संसार में आये, वे सृष्टिकर्त्ता थे, लेकिन संसार ने उन्हें नहीं पहिचाना, प्रभु यीशु ज्योति थे पर अंधकार ने उन्हें ग्रहण नहीं किया, वे अपने घर आये और उनके अपनों ने उन्हें स्वीकार नहीं किया (यूहन्ना 1:5, 10, 11)

प्रभु यीशु आज जीवित है, वो कब्र में नहीं है, वो कोई निर्जीव वस्तु, तस्वीर या मात्र शक्ति नहीं हैं। वो सृष्टिकर्त्ता हैं, जिन्होंने परमेश्वर के स्वरूप में हम सबकी रचना की है,

मनुष्य की वास्तविक समस्या

मनुष्य की समस्या पानी की कमी, गरीबी, बुरी सरकार या बेराजगारी नहीं है। या फिर शारीरिक बीमारी टी. बी. कैंसर या ऐड्स नहीं है। वास्तविक समस्या एक अदृष्य आत्मिक अवस्था है। यहाँ शरीर, प्राण और आत्मा में जहर फैला हुआ है, जिसे पाप कहते हैं। पाप जीवित और सच्चे परम ईश्वर का विरोध है, उसके सत्य का तिरस्कार है, और उसकी इच्छा का उल्लंघन है। इसके कारण परमेश्वर से अलगाव होता है, और संबंध टूट जाता है।

पाप, परमेश्वर की इच्छा और गुणों के विपरीत का जीवन है और ये मनुष्य में शारीरिक और आत्मिक मृत्यु उत्पन्न करता है।

चारों तरफ़ नज़र घुमा कर देखिये, चोरी, डकैती, हिंसा और हत्या, बलात्कार, धोखा, भ्रष्टाचार, अन्याय और अधर्म फैला हुआ है। बाहर छोड़िये अपने अंदर झाँक कर देखिये, ईर्ष्या, क्रोध, बैर, झगड़ा, विरोध, लालच, वासना, घमंड, और झूठ सब कुछ भरा हुआ है।

अपने जीवन के उद्देश्यों को टटोल कर तो देखिये मालूम पड़ जायेगा की हर काम के पीछे स्वार्थ है। दान देते हैं, पर साथ में नाम कमाना चाहते हैं। गरीबों की मदद करना चाहते हैं, पर अखबार में नाम लिखवाना चाहते हैं। पड़ोसी को शायद अस्पताल तो ले जाते हैं, पर बदले में कुछ उम्मीद भी रखते हैं।

कौन भटक गया है?

ईश्वर या हम, जैसे एक बच्चा मेले में खो जाता है, पर सोचता है, कि माता पिता खो गये हैं। पर सच्चाई तो ये है, कि माता-पिता नहीं बच्चा खोया है। इसी तरह ईश्वर नहीं मनुष्य खोया है।

जब तक ये सत्य हम पर प्रगट नहीं होगा, तब तक हम अपने प्रयासों के द्वारा परमेश्वर तक पहुँचने की कोशिश करते रहेंगे, सृष्टिकर्त्ता ईश्वर को हम सृष्टि की निर्जीव वस्तुओं में ढूंढ़ते रहेंगे।

सांसारिक गुरु

आज संसार में बहुत से शिक्षक हैं। बहुत गुरू हैं हर जगह धर्म प्रचार और सभायें हैं। किताबें हैं, रेडियो और टी. वी. पर प्रवचन हैं। ज्ञान हर जगह है, पर जीवन नहीं है बोला कुछ जाता है, और किया कुछ जाता है। ईश्वरीय जीवन नहीं है। प्रभु यीशु ने समकालीन धर्मगुरूओं के बारे में कहा कि इनके पीछे चलने से न तो मोक्ष न स्वर्ग और न ही ईश्वर मिलता है, पर हाँ अंत नरक की अग्निज्वाला में अवश्य होता है। नश्वर मानव जब स्वंयं अपने को गुरू घोषित करता है, तो अपना ज्ञान बता कर लोगों को बहकाता रहता है। अपने लिये अनुयाईयों और चेलों का जमा करता है। खुद सिहाँसन पर बैठता है, बड़े-बड़े धर्मस्थल बनाता है। सोना-चाँदी इकट्ठा करता है, और अपने अनुयाईयों से दान दक्षिणा वसूल करता है, और अपनी सेवा कराता है।

सनातन सत्गुरु

प्रभु यीशु ने कहा यदि कोई प्रधान बनना चाहता है तो सबका सेवक बने, जो बड़ा बनना चाहता है वह सबका नौकर बने। सनातन् सत्गुरु प्रभु यीशु कुर्सी से खड़े हुये, उन्होंने नौकर के कपड़े पहने। और पानी लेकर वे शिष्यों के पैरों पास बैठे, और उन्होंने अपने शिष्यों के पाँव धोये। और कहा जाओ ईश्वरीय जीवन का प्रदर्शन करो जैसे मैंने किया है, तुम भी वैसा ही करो।

प्रभु यीशु स्वर्ग से आये और वहाँ की बातें हमें बताई, इसलिये हमे उनकी बातों पर विश्वास करना पड़ेगा।

प्रभु यीशु मोक्षदाता परमेश्वर के अवतार इस धरती पर मानव रुप धारण कर आते हैं, यहाँ आकर वे कहते हैं कि स्वर्ग में कोई खतरनाक ईश्वर नहीं है, कोई खूनी ईश्वर, तलवार भाला या हथियार लेकर नहीं बैठा है, पर स्वर्ग का ईश्वर हमारा पवित्र और प्रेमी पिता है, जो हर मनुष्य से उसी तरह प्रेम करता है, जैसे एक पिता अपने बीमार मरणासन्न बच्चे से प्रेम करता है, पर साथ ही साथ उसकी बीमारी से घृणा करता है, इसी तरह परमेश्वर हम से तो प्रेम करते हैं, पर हमारी पापी अवस्था से घृणा करते हैं, वह हमें बचाना चाहते हैं, हमारी मृत्यु और बीमारी का इलाज करना चाहते हैं यही कारण है, बाइबिल कहती है, परमेश्वर प्रेम है।

प्रभु यीशु का क्रूस मरण

जब प्रभु यीशु क्रूस पर, मानव पापमोचन के लिये मृत्यु की कीमत अदा करते हैं, तो उनके साथ एक तरफ एक हत्यारा डाकू भी क्रूस पर मर रहा था। उसने प्रभु यीशु के सामने अपने दुष्कर्मों को, पाप को अंगीकार किया,

और याचना की, कि ईश्वरीय लोक में उसकी सुधी ली जाये। प्रभु यीशु ने डाकू हत्यारे से कहा कि स्वर्गलोक में तुम मेरे साथ आज ही पहुंचोगे, डाकू को मोक्ष मिल सका।

पाप कर्म ही से नहीं होता है, पर कर्म के पीछे विचारों और उद्देश्यों के रुप में छिपा रहता है। उदाहरण के रुप में प्रभु यीशु हत्या को पाप का फल बोलते हैं, और हृदय में भरे क्रोध को भी हत्या कहते हैं, ईश्वर की दृष्टि में क्रोध और हत्या समान पाप हैं।

प्रभु यीशु में हर पापी के लिये आशा है। चाहे वो शराबी हो या कोई वेश्या, चोर हो या कोई डाकू हत्यारा या झूठा पाखंडी धर्मगुरु, सब की मुक्ति का उपाय है। इसीलिये प्रभु यीशु मसीह की खुशखबरी का प्रचार किया जाता है।

परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम किया, कि उसने अपना इकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो को कोई उस पर विश्वास करे वह नाश न हो पर अनंत जीवन पाये। यूहन्ना 3:16

एक घटना

रुस में एक शहंशाह थे, जिनका नाम ज़ार निकोलस था वो रात में भेषबदल कर अपने सैनिकों की चौकियों में जाकर देखते थे, कि क्या हो रहा है। एक बार उन्होंने एक सैनिक को टेबिल पर सिर रखते और सोते हुये पाया। उसके सामने टेबल पर एक कागज़ रखा था जिसमें लाखों रुपये, जो उसने बहुत से लोगों से कर्ज़ में लिये थे उनका हिसाब था। और नीचे लिखा था, "कौन मेरा कर्ज़ चुकायेगा?" ज़ार निकोलस ने कलम निकालकर वहाँ अपने हस्ताक्षर कर दिये और लिखा "मैं चुकाऊँगा" आत्महत्या की ओर बढ़ने वाले सैनिक को मुक्ति मिली यह एक सच्ची घटना है, पर यही सत्य प्रभु यीशु मसीह ने दिखाया हमारे पापों की कीमत परमेश्वर के न्याय के अनुसार, मृत्युदंड द्वारा ही अदा की जा सकती थी। इसीलिये वे पापमोचन के लिये स्वयं बलि बनते हैं।

शारीरिक मृत्यु और उसके उपरान्त आत्मिक मृत्यु जो हमें नरक की आग में ले जाती है उससे निकास प्रभु यीशु में प्राप्त है।

आखिर प्रभु यीशु ने किया क्या है?

प्रभु यीशु ने स्वर्ग के अपने ईश्वरीय अधिकार को छोड़ा अपने ताज को अलग किया। मनुष्य रुप धारण किया और कंगाल की तरह गरीब बनकर वे इस संसार में आये (फिलिप्पियों 2:5-10)

मनुष्य मात्र के सेवक बने, और स्वर्गीय पिता के प्रेम को प्रगट किया और क्रूस

की दर्दनाक मृत्यु हमारे पापों के लिए उठाई। प्रभु, यीशु के क्रूस पर इस संसार का न्याय नहीं अन्याय लटका हुआ था। मनुष्य का क्रोध, ईर्ष्या, लालच और घमंड लटका था। उन्हें कब्र में दफ़नाया गया पर तीसरे दिन अपनी ईश्वरीय सामर्थ को प्रगट करते हैं। वे जीवित हो उठे, यरुशलेम शहर और आसपास के सैकड़ों लोगों को दिखाई दिये, और ईश्वरीय राज्य के भेदों को लोगों पर प्रगट किया। सैकड़ों लोगों के देखते देखते उनका स्वर्गारोहण हुआ। उन्होंने कहा में फिर दोबारा लौट कर आऊँगा, और तब संसार का न्याय होगा।

ये बातें कथा-कहानी नहीं है, पर इतिहास में घटी सत्य घटनायें हैं।

परमेश्वर कहता है, मनुष्य का एक बार जन्म लेना और उसके बाद न्याय होना अवश्य है।

अब सवाल क्या है?

आपके पास अंधकार है, या जीवित ईश्वर का प्रकाश? सत्य है, या मनुष्य का झूठ? आशा है या लगातार निराशा? हार है, या परमेश्वर का जीवन? पापमोचन या दिखावटी धरम करम?

क्या आप प्रभु यीशु को स्वीकार करना चाहते हैं? वे जीवित हैं क्या आप उनपर भरोसा करना चाहते हैं? प्रभु यीशु सच्ची शाँति देते हैं। ऐसी शाँति जो भय को मिटा देती है। और दु:ख पर विजय देती है।

प्रभु यीशु का नाम लेकर देखिये, आज आप मोक्ष पा सकते हैं। चाहे आप किसी धर्म-जाती रंग-रुप के क्यों न हों, प्रभु यीशु पर विश्वास करिये उसका नाम लीजिये और मेरे साथ संपूर्ण विश्वास के साथ प्रार्थना दोहराइये।

मोक्ष प्रार्थना

हे प्रभु यीशु में कर्म से विचारों और उद्देश्यों से पापी हूँ, आप स्वयं परमेश्वर पुत्र बन कर आये आपने मेरे पापों की कीमत चुकाने के लिये अपना पवित्र खून बहाया और मृत्यु उठाई और आज आप जीवित हैं। आप मेरे पापों कों क्षमा करें मुझे नया जीवन दें।

अपनी पवित्र आत्मा का दानदें, ताकि मैं आपका जीवन पा सकूँ, और सिर्फ आपके मार्ग पर चल सकूँ। आज से मैं आपको अपना गुरु बनाता हूँ। मेरा आपके ऊपर संपूर्ण विश्वास और भरोसा है।

आमीन्

प्रतिदिन के प्रभु यीशु वचन

मत्ती. ५

१ तान् मानबनिवहान् दृष्ट्वा स गिरिमारुरोह। तत्र तस्मिन्नुपविष्टे। २ शिष्यास्तस्य समीपमागमन्। तदा स वक्त्रमुद्धाट्य तेभ्यः शिक्षां दातुं प्रवृत्तोऽब्रवीत्-३ दीनात्मानो धन्याः, यतः स्वर्गराज्यं तेषामेव। ४ शोकार्त्ता धन्याः, यतस्ते सान्त्वयिष्यन्ते। ५ मृदुशीला धन्याः, यतस्ते दायांशवत् क्षितिं लप्स्यन्ते। ६ धार्म्मिकतां बुभुक्षवः पिपासवश्च धन्याः, यतस्ते परितर्प्स्यन्ति। ७ कृपावन्तो धन्याः, यतस्ते कृपामवाप्स्यन्ति। ८ शुचिहृदो धन्याः, यतस्त ईश्वरं दक्ष्यन्ति। ९ सन्धिकारिणो धन्याः, यतस्त ईश्वरस्य पुत्रा इत्यभिधायिष्यन्ते। १० धर्म्महेतुनोपद्रुता धन्याः, यतः स्वर्गराज्यं तेषामेव। ११ धन्या यूयं यदा मनुष्या मदर्थं युष्मान् निन्दन्त्युपद्रवन्ति च युष्मद्विरुद्धं मृषा सर्व्वविधां कुकथां व्याहरन्ति च। १२ आनन्दतोल्लसत च, यतः सञ्चितं स्वर्गे युष्माकं प्रभूतं पारितोषिकं। वास्तव युष्माकं पूर्व्वं ये भाववादिन आसन्, तांस्ते तथैवोपाद्रवन्।

धन्य मनुष्य

१ यीशु इस भीड़ को देखकर पहाड़ पर चढ़ गये। जब वह बैठ गये तब उनके चेले उनके पास आए। २ यीशु ने उन्हें शिक्षा देना आरम्भ किया। वह उन्हें यह उपदेश देने लगे: ३ "धन्य हैं वे, जो मन के दीन हैं, क्योंकि स्वर्ग का राज्य उन्हीं का है। ४ धन्य हैं वे, जो शोक करते हैं, क्योंकि वे शांति पाएंगे। ५ धन्य हैं वे, जो नम्र हैं, क्योंकि वे पृथ्वी के अधिकारी होंगे। ६ धन्य हैं वे, जो धर्म के भूखे और प्यासे हैं, क्योंकि वे तृप्त किए जाएंगे। ७ धन्य हैं वे, जो दयावान हैं, क्योंकि उन पर दया की जाएगी। ८ धन्य हैं वे जिनके मन शुद्ध हैं, क्योंकि वे परमेश्वर को देखेंगे। ९ धन्य हैं वे, जो मेल-मिलाप कराते हैं, क्योंकि वे परमेश्वर के पुत्र कहलाएंगे। १० धन्य हैं वे, जो धर्म के कारण सताए जाते हैं, क्योंकि स्वर्ग का राज्य उन्हीं का है। ११ "धन्य हो तुम, जब मनुष्य मेरे कारण तुम्हारी निन्दा करें, तुम्हें सताएं और झूठ बोल-बोलकर तुम्हारे विरोध में सब प्रकार की बुरी बात कहें। १२ तब तुम आनन्दित और मगन होना; क्योंकि तुम्हारे लिये स्वर्ग में बड़ा पुरस्कार है। उन्होंने उन नबियों को जो तुम से पहले हुए हैं, इसी प्रकार सताया था।

१६ स्योपरि स्थापयन्ति सा च गृहेऽवस्थितानां, सर्व्वेषां राजते। तथैव युष्माकं

दीप्ति र्मनुष्याणां समक्षं विराजतां, तथा कृते युष्माकं सत्क्रिया दृष्ट्वा ते युष्माकं स्वर्गस्थं पितरं स्तोष्यन्ति।

ज्योति

१६ इसी प्रकार तुम्हारा प्रकाश मनुष्यों के सामने चमके कि वे तुम्हारे भले कामों को देखकर तुम्हारे पिता की, जो स्वर्ग में है, बड़ाई करें।

१८ न मोचनाय, प्रत्युत पूरणायाहमागतः, यतोऽहं युष्मान् सत्यं ब्रवीमि, यावद् व्योममेदिन्योरत्ययो न भविष्यति तावद् व्यवस्थाया एका मात्रैको विन्दु र्वा नैवात्येष्यति सर्व्वमेव हि सेत्स्यति।

परमेश्वर के नियम

१८ मैं तुम से सच कहता हूं कि जब तक आकाश और पृथ्वी टल न जाएं तब तक धर्म-व्यवस्था से एक मात्रा या एक बिन्दु भी बिना पूरा हुए नहीं टलेगा।

२१ त्वं नरहत्यां माऽकार्षीः, यस्तु नरहत्यां करोति स धर्म्माधिकरणे शासनीयो भविष्यतीति प्राचीनेभ्यः कथितमासीत् युष्माभिस्तच्छ्रुतम्। २२ अहन्तु युष्मान् ब्रवीमि, यः कश्चिदकारणं स्वभ्रात्रे क्रुध्यति स धर्म्माधिकरणे शासनीयो भविष्यति। यश्च स्वभ्रातरं निर्ब्बोधस्त्वमिति वदति स सभायां शासनीयो भविष्यति। यश्च वदति मूढस्त्वमिति, सोऽग्निमये नरके शासनीयो भविष्यति।

परमेश्वर और धार्मिक मनुष्य के दृष्टिकोण में अंतर

२१ "तुम सुन चुके हो कि प्राचीनकाल के लोगों से कहा गया था, 'हत्या न करना, और जो कोई हत्या करेगा, वह कचहरी में दण्ड के योग्य होगा।' २२ परन्तु मैं तुम से कहता हूं: जो मनुष्य अपने भाई पर क्रोध करेगा, वह कचहरी में दण्ड के योग्य होगा। जो मनुष्य अपने भाई को अपशब्द कहेगा, वह धर्म महासभा में दण्ड के योग्य होगा। जो मनुष्य अपने भाई से कहेगा 'अरे मूर्ख' वह नरक की आग के दण्ड के योग्य होगा।

२७ त्वं व्यभिचारं माऽकार्षीरिति प्राचीनेभ्यः कथितमासीत् युष्माभिस्तच्छ्रुतम्। २८ अहन्तु युष्मान् ब्रवीमि यः कश्चित् कामुकभावेन योषितं प्रति दृक्पातं करोति, स तावता स्वहृदये तया सह व्यभिचारं कृतवान्।

व्यभिचार और कामुक विचार एक हैं

२७ "तुम सुन चुके हो; तुम से कहा गया था, 'व्यभिचार न करना।' २८ परन्तु

मैं तुम से यह कहता हूं, जो कोई पुरुष किसी स्त्री को बुरी नज़र से देखे तो वह अपने मन में उस से व्यभिचार कर चुका।

३१ पुनश्च कथितमासीत्, यः कश्चित् स्भार्य्यां त्यजति, स तस्यै त्यागपत्रं ददातु। ३२ अहन्तु युष्मान् वदामि, यः कश्चिद् व्यभिचारदोषादन्येन हेतुना स्वभार्य्यां त्यजति, स तां व्यभिचारं कारयति! यश्च त्यक्तां योषितमुद्वहति स व्यभिचारं करोति। ३३ पुनस्त्वं मृषा शपथं माऽकार्षीः, स्वशपथफलन्तु प्रभवे दास्यमीति प्राचीनेभ्यः कथितं, युष्माभिस्तच्छु तम्।

विवाह न टूटे

३१ "तुम से यह भी कहा गया था, 'जो पति अपनी पत्नी को त्याग देगा तो वह उसे त्यागपत्र अवश्य देगा।' ३२ परन्तु मैं तुम से यह कहता हूं कि जो पति अपनी पत्नी को व्यभिचार के सिवा किसी और कारण से छोड़ेगा तो वह उस से व्यभिचार करवाता है; और जो पुरुष उस त्यागी हुई स्त्री से विवाह करेगा वह भी व्यभिचार करता है।

सबसे प्रेम

३३ "फिर तुम सुन चुके हो कि प्राचीनकाल के लोगों से कहा गया था, 'झूठी शपथ न खाना; परन्तु प्रभु के लिये अपनी शपथ को पूरी करना। ३४ परन्तु मैं तुम से यह कहता हूं कि कभी शपथ न खाना। न तो स्वर्ग की; क्योंकि वह परमेश्वर का सिंहासन है। ३५ न धरती की, क्योंकि वह परमेश्वर के पांवों की चौकी है। न यरूशलेम की; क्योंकि वह महाराजा का नगर है। ३६ अपने सिर की भी शपथ न खाना; क्योंकि तुम एक बाल को भी न सफेद कर सकते हो, और न काला कर सकते हो। ३७ तुम्हारी बात 'हां' की 'हां' हो; और 'नहीं' की 'नहीं' हो; क्योंकि जो कुछ इस से अधिक होता है वह 'बुराई' से होता है। ३८ "तुम सुन चुके हो, तुम से कहा गया था, 'आंख के बदले आंख, और दांत के बदले दांत। ३९ परन्तु मैं तुम से यह कहता हूं कि बुरे मनुष्य का सामना न करना। यदि कोई बुरा मनुष्य तुम्हारे दाहिने गाल पर थप्पड़ मारे, उसकी ओर दूसरा गाल भी फेर देना। ४० यदि कोई बुरा मनुष्य तुम पर नालिश करके तुम्हारा कुरता लेना चाहे तो उसे दोहर भी ले लेने देना। ४१ यदि कोई तुम्हे मील भर बेगार में ले जाए तो उसके साथ बेगार में दो मील चले जाना। ४२ जो कोई तुम से मांगे, उसे दो; और जो कोई तुम से उधार लेना चाहे, उस से मुंह न मोड़ना। ४३ "तुम सुन चुके हो, तुम से कहा

गया था; 'अपने पड़ोसी से प्रेम करना, और अपने बैरी से बैर।' ४४ परन्तु मैं तुम से यह कहता हूं: अपने शत्रुओं से प्रेम करो और अपने सतानेवालों के लिये प्रार्थना करो। ४५ जिस से तुम अपने स्वर्गिय पिता की सन्तान ठहरोगे वह भलों और बुरों दोनों पर अपना सूर्य उदय करता है, और धर्मियों और अधर्मियों दोनों पर पानी बरसाता है। ४६ यदि तुम अपने प्रेम करने वालों हीसे प्रेम करो तो तुम्हें क्या पुरस्कार मिलेगा? क्या महसूल लेनेवाली पापी भी ऐसा ही नहीं करते? ४७ "यदि तुम केवल अपने भाइयों ही को नमस्कार करो तो कौन-सा बड़ा काम करते हो? क्या अन्य जाति के लोग भी ऐसा नहीं करते? ४८ इसलिये तुम्हें सिद्ध बनना चाहिए जैसा तुम्हारा स्वर्गिय पिता सिद्ध है।

मत्ती. ६

९ अतो यूयमित्थं प्रार्थयध्वं, भो अस्माकं स्वर्गस्थ पितः, तव नाम पवित्रं पूज्यतां। १० तव राज्य मायातु। ११ यथा स्वर्गे तथा मेदिन्यामपि तवेच्छा सिध्यतु। १२ श्वस्तनं भक्ष्यमद्याम्मभ्यं देहि। वयञ्च यथास्मदपराधिनां क्षमामहे, तथा त्वमस्माकमपराधान् क्षमस्व। १३ अस्मांश्च परीक्षां मा नय, अपि तु दुरात्मत उद्धर। यतो राज्यं पराक्रमः प्रतापश्च युगे युगे तवैव। १४ आमेन् वास्तवं हि यूयं चेन्मनुष्याणामपराधान् क्षमध्वे, तर्हि युष्माकं स्वर्गस्थः पिता युष्माकमपि क्षमिष्यते।

प्रार्थना कैसे करें

९ तुम इस प्रकार प्रार्थना किया करो: "हे हमारे पिता, आप स्वर्ग में है। आपका नाम पवित्र माना जाए। १० आपका राज्य आए। आपकी इच्छा जैसी स्वर्ग में पूरी होती है वैसे पृथ्वी पर भी हो। ११ हमारी दिन भर की रोटी आज हमें दें। १२ जिस प्रकार हम ने अपने अपराधियों को क्षमा किया है, वैसे ही आप भी हमारे अपराधों को क्षमा करें। १३ हमें परीक्षा में न डालें, परन्तु बुराई से बचायें; (क्योंकि राज्य, पराक्रम और महिमा सदा आपके ही हैं।" आमीन।) १४ "यदि तुम मनुष्य के अपराध क्षमा करोगे, तो तुम्हारा पिता भी जो स्वर्ग में है, तुम्हें क्षमा करेगा।

२५ अतोऽहं युष्मान् ब्रवीमि, किं भक्षिष्यामः किं वा पास्याम इति विचिन्त्य स्वप्राणानधि, किं वसिष्यामह इति विचिन्त्य स्वदेहमधि वा माकुलीभवत। किं हि प्राणा न भक्ष्याच्चछेष्ठाः? वसनाद् वा नापि देहः श्रेष्ठः? २६ विहायसो विहङ्गमान् निरीक्षध्वं, तै र्नोप्यते नापि कृत्यते न चापि कुशूलेषु सञ्चीयते युष्माकं स्वर्गस्थः

पिता च तान् पुष्णाति। २७ किं यूयं तेभ्यो नाधिकं विशिष्यध्वे? चिन्तयित्वा वा युष्माकं केन स्ववयो हस्तमेकं वर्द्धयितुं शक्यते?

चिंता न करो

२५ "मैं तुम से कहता हूं कि अपने प्राण के लिये यह चिन्ता न करना कि हम क्या खाएंगे अथवा क्या पीएंगें और न शरीर के लिये कि हम क्या पहिनेंगे। क्या प्राण भोजन से, और शरीर वस्त्र से बढ़कर नहीं है? २६ आकाश के पक्षियों को देखो! वे न बोते हैं, न काटते हैं, और न खत्तों में बटोरते हैं। फिर भी तुम्हारा स्वर्गिय पिता उनको खिलाता है। क्या तुम्हारा महत्व उन से अधिक नहीं है।

२७ "तुम में कौन ऐसा मनुष्य है जो चिन्ता करके अपनी अवस्था में एक घड़ी भी बढ़ा सकता है? २८ तुम वस्त्र के लिये क्यों चिन्ता करते हो? जंगली फूलों पर ध्यान दो। वे कैसे बढ़ते हैं? वे न परिश्रम करते हैं, और न कातते हैं। २९ मैं तुम से कहता हूं, राजा सुलैमान भी, अपने सारे वैभव में उन में से किसी के समान सुन्दर राजसी वस्त्र पहिने हुए न था। ३० इसलिये जब परमेश्वर मैदान की घास को जो आज है, और कल आग में झोंकी जाएगी, ऐसा भव्य वस्त्र पहिनाता है तो हे अल्पविश्वासियो, तुम को वह क्यों न पहिनाएगा? ३१ "इसलिये तुम चिन्ता मत करना और यह न कहना कि हम क्या खाएंगे? क्या पीएंगे? क्या पहिनेंगे? ३२ अन्य जाति के लोग इन सब वस्तुओं की खोज में रहते हैं। तुम्हारा स्वर्गिय पिता जानता है कि तुम्हें ये सब वस्तुएं चाहिए। 33 इसलिये पहले तुम परमेश्वर के राज्य और उसके धर्म की खोज करो तो ये सब वस्तुएं भी तुम्हें मिल जाएंगी। ३४ "कल के लिये चिन्ता न करो; क्योंकि कल का दिन अपनी चिन्ता आप कर लेगा। आज के लिये आज ही का दुख बहुत है।

मत्ती. ७

माँगो, ढूँढो, और खटखटाओ

७ याचध्वं, तेन युष्मभ्यं दायिष्यते। अन्विच्छत, तेनासादयिष्यथ। ८ द्वारमाहत तेन युष्मभ्यम् उद्घाटयिष्यते। यतो यः कश्चिद् याचते स लभते, यश्चान्विच्छति स ग्रासादयति, यश्च द्वारमाहन्ति तदर्थमुद्घाट्यते ९ युष्मत्सु तादृशः को वा मानवो विद्यते यः स्वपुत्रेण। १० पूपं याचितस्तस्मै प्रस्तरं दास्यति, मीनं वा याचितः सर्पं

दास्यति? ११ तद् दुर्जना अपि यूयं चेत् स्वसन्तानेभ्यो हितदानानि वितरितुं जानीथ, तर्हि किमधिकं युष्माकं स्वर्गस्थः पिता स्वयाचकेभ्यो हितानि वितरिष्यति।

७ "मांगो, तो तुम्हें दिया जायेगा। ढूंढो, तो तुम पाओगे। खटखटाओ, तो तुम्हारे लिये द्वार खोला जाएगा। ८ क्योंकि जो कोई मांगता है, उसे मिलता है। जो ढूंढता है, वह पाता है। जो खटखटाता है, उसके लिये द्वार खोला जाएगा। ९ "तुम में ऐसा कौन मनुष्य है जिसका पुत्र उस से रोटी मांगे तो वह उसे पत्थर दे? १० यदि वह मछली मांगे तो उसे सांप दे? ११ जब तुम बुरे होकर, अपने बच्चों को अच्छी वस्तुएं देना जानते हो तो तुम्हारा स्वर्गिय पिता अपने मांगनेवालों को अच्छी वस्तुएं क्यों न देगा?

१८ सुवृक्षः कुफलान्युत्पादयितुं न शन्कोति, कुवृक्षश्च सुफलान्युत्पादयितुं न शन्कोति। १९ येन सुफलं नोत्पाद्यते, तादृशः सर्व्वो वृक्ष उच्छिद्यते वन्हौ प्रक्षिप्यते च। २० अतो यूयं तेषां फलैरेव तान् निश्चेष्यथ। २१ ये मां प्रभो प्रभो इत्यभिभाषन्ते न ते सर्व्वे स्वर्गराज्यं प्रवेक्ष्यन्ति; यस्तु मम स्वर्गस्थपितुरभीष्टमाचरति स एव प्रवेक्ष्यति।

मनुष्य की पहचान, जीवन के फलों से है

१५ झूठे नबियों से सावधान रहो। वे भेड़ों के भेष में तुम्हारे पास आते हैं; परन्तु भीतर से वे फाड़नेवाले भेड़िए हैं। १६ ऐसे झूठे नबियों के फलों से तुम उन्हें पहचान लोगे। क्या लोग झाड़ियों से अंगूर, अथवा ऊंटकटारों से अंजीर तोड़ते हैं? १७ इसी प्रकार हर एक अच्छा पेड़ अच्छा फल देता है; और बुरा पेड़ बुरा फल देता है। १८ अच्छे पेड़ में बुरा फल नहीं लग सकता, और न बुरे पेड़ में अच्छा फल लग सकता है। १९ जो पेड़ अच्छा फल नहीं देता वह काटा और आग में डाला जाता है। २० इस प्रकार उनके फलों से तुम उन्हें पहचान लोगे। २१ "जो मुझे 'हे प्रभु', 'हे प्रभु' कहते हैं, उन में से हर एक जन स्वर्ग के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकेगा। केवल वह मनुष्य, जो मेरे स्वर्गिय पिता की इच्छा पर चलता है, परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करेगा।

मत्ती. ८

प्रभु यीशु का सृष्टि पर अधिकार

२३ जब यीशु नाव पर चढ़े तब उनके चेले उनके पीछे हो लिए। २४ तभी झील में भयंकर तूफान उठा नाव लहरों से ढंकने लगी। यीशु सो रहे थे।

२५ तब चेलों ने पास आकर यीशु को जगाया, और उन से कहा, "हे प्रभु, हमें बचाइए; हम तो मरने को हैं।" २६ यीशु ने उनसे कहा, "हे अल्पविश्वासियो, क्यों डरते हो?" तब यीशु उठे और उन्होंने तूफान और पानी को डांटा, और सब शान्त हो गया। २७ चेले अचरज में डूबकर कहने लगे, "यह कैसे मनुष्य हैं कि तूफान और पानी भी इनकी आज्ञा मानते हैं।"

प्रभु यीशु भूत-प्रेतों से मुक्ति देते हैं

२८ जब यीशु झील के उस पार गदरेनियों के प्रदेश में पहुंचे तब दो मनुष्य जिन में दुष्टात्माएं थीं, कब्रों से निकलते हुए यीशु को मिले। वे इतने प्रचण्ड थे कि कोई उस मार्ग से जा नहीं सकता था। २९ उन्होंने चिल्लाकर कहा, "हे परमेश्वर के पुत्र, हमारा आप से क्या काम? क्या आप समय से पहले हमें दुःख देने यहां आये हैं?" ३० उन से कुछ दूर बहुत से सुअरों का एक झुण्ड चर रहा था। ३१ दुष्टात्माओं ने यीशु से यह कहकर विनती की, "यदि आप हमें निकाल ही रहे हैं तो हमें सूअरों के झुण्ड में भेज दीजिए।" ३२ यीशु ने उन से कहा, "जाओ।" वे निकलकर सूअरों में पैठ गए और सूअरों का सारा झूण्ड कड़ाड़े पर से झपटकर पानी में जा पड़ा, और डूब मरा।

मत्ती. ११

> २५ तस्मिन् काले यीशुरनुबभाषे, भो स्वर्गमर्त्त्ययोः स्वामिन् पितः, त्वामहं साधु वदामि, यतस्त्वया विज्ञेभ्यस्तीक्ष्णबुद्धिभ्यश्चेमानि निगुह्य शिशूनामाविष्कृतानि। २६ अतः किं पितः, यदित्थं तव दृष्टौ यत् प्रीतिकरं तदेव सिद्धं। २७ मम पित्रा मयि सर्व्वमेव समर्पितं; पितरं विनापरः कोऽपि पुत्रं न विजानाति, पुत्रश्च विनापरः कोऽपि पितरं न विजानाति, यस्मै च तं प्रकाशयितु पुत्राय रोचते सोऽपि तं विजानाति। २८ भो परिश्रान्ता भाराक्रान्ताश्च सर्व्वे, मम समीपमायात, तेनाहं युष्मान् विश्रमयिष्यामि।

मैं तुम्हें विश्राम दूँगा

२५ उसी समय यीशु ने कहा, "हे पिता, स्वर्ग और पृथ्वी के प्रभु! मैं आपका धन्यवाद करता हूं कि आप ने इन बातों को ज्ञानियों और समझदारों से छिपा रखा, और बालकों पर प्रकट किया। २६ हां, हे पिता, क्योंकि आपको यही अच्छा लगा। २७ मेरे पिता ने मुझे सब कुछ सौंपा है। कोई पुत्र को नहीं जानता, केवल पिता; और कोई पिता को नहीं जानता, केवल पुत्र; और वह जिस पर

पुत्र उन्हें प्रकट करना चाहे। २८ "हे सब परिश्रम करनेवालो और बोझ से दबे हुए लोगो, मेरे पास आओ। मैं तुम्हें विश्राम दूंगा। २९ मेरा जुआ अपने ऊपर उठा लो; और मुझ से सीखो; क्योंकि मैं नम्र और मन में दीन हूं; और तुम अपने मन में विश्राम पाओगे। ३० क्योंकि मेरा जुआ सहज और मेरा बोझ हलका है।"

मत्ती. १४

पाँच रोटी से हज़ारों की भूख मिटी

१५ जब संध्या हुई तब यीशु के चेलों ने उनके पास आकर कहा, "यह सुनसान जगह है, और देर हो रही है। लोगों को विदा कीजिए ताकि वे बस्तियों में जाकर अपने लिये भोजन मोल लें।" १६ यीशु ने उन से कहा, "उनका जाना आवश्यक नहीं! तुम ही उन्हें खाने को दो।" १७ उन्हों ने यीशु से कहा, "यहां हमारे पास पांच रोटी और दो मछलियों को छोड़ और कुछ नहीं है।" १८ यीशु ने कहा, "उनको यहां मेरे पास ले आओ।" १९ तब यीशु ने लोगों को घास पर बैठने को कहा। यीशु ने उन पांच रोटियों और दो मछलियों को लिया। उन्हों ने स्वर्ग की ओर देखकर धन्यवाद किया और रोटियां तोड़-तोड़कर चेलों को दीं, और चेलों ने लोगों को। २० सब खाकर तृप्त हो गए। चेलों ने बचे हुए टुकड़ों से भरी हुई बारह टोकरियां उठाई। २१ खानेवाले पुरुष लगभग, स्त्रियों और बालकों को छोड़कर, पांच हज़ार थे।

> ३५ स्थानस्य तस्य नराश्च तमभिज्ञाय कृत्स्नं जनपदं जनान् प्रहित्यास्वस्थान् मनुष्यान् ३६ सर्व्वांस्तस्य समीपमानायमासुः प्रार्थयाञ्चक्रिरे च ते तेषां कृते तदीयवस्त्रप्रलम्बकस्य स्पर्शनानुमतिमेव, तेरुश्च तावन्तो यावन्तः स्पर्शनं चक्रुः

३५ वहां के लोगों ने आस-पास के सारे क्षेत्र में कहला भेजा, और सब बीमारों को यीशु के पास लाए। ३६ वे यीशु से बिनती करने लगे कि वह उन्हें अपने वस्त्र के आंचल ही को छूने दें। और जितनों ने यीशु को छुआ, वे स्वस्थ हो गए।

मत्ती. १६

> २४ यीशुस्तदा स्वशिष्यान् जगाद, कश्चिन्मामनुगन्तुमिच्छति, स तर्ह्यात्मानं प्रत्याख्यातु, स्वक्रुशमाददातु मामनुव्रजतु च। २५ यतो यः कश्चित् स्वप्राणान् रिरक्षिषति स तान् हारयिष्यति, यस्तु मदर्थं स्वप्राणान् हारयति स तान् लप्स्यते। २६ यतो मनुष्यः कृत्स्न जगत् लत्वधा यदि स्वप्राणै र्वञ्च्यते, तर्हि तस्य हितं वा किं

भवति? २७ स्वप्राणानां कं वा निष्क्रयं मनुष्यो दास्यति? यतः स्वीयदूतैः सह मनुष्यपुत्रः स्वपितुः प्रतापेनागमिष्यति, तदा च स प्रत्येकं तदाचारानुरूपं फलं दास्यति।

स्वेच्छा का परित्याग

२४ तब यीशु ने अपने शिष्यों से कहा, "यदि कोई मेरे पीछे आना चाहे तो वह अपने आप का इनकार करे। वह अपना क्रूस उठाए, और मेरे पीछे हो ले। २५ जो कोई अपना प्राण बचाना चाहेगा, वह उसे खोएगा; और जो कोई मेरे लिये अपना प्राण खोएगा, वह उसे बचाएगा। २६ यदि मनुष्य सारे संसार को प्राप्त करे, किंतु अपने प्राण को खो दे, तो उसे क्या लाभ होगा? मनुष्य अपने बदले में क्या दे सकता है? २७ मनुष्य का पुत्र अपने स्वर्गदूतों के साथ अपने पिता की महिमा में आनेवाला है। उस समय वह हर एक को उसके कामों के अनुसार प्रतिफल देगा।

मत्ती. २३

१ यीशुस्तदा जननिवहेभ्यः स्वशिष्येभ्यश्च कथयामास, शास्त्राध्यापकाः ११ युष्माकं मध्ये यश्च महत्तमः स युष्माकं परिचारको भविष्यति। १२ यस्त्वात्मानम् उच्चीकरिष्यति स नीचीकारिष्यते, यश्चात्मानं नीचीकरिष्यति स उच्चीकारिष्यते।

तुममें जो प्रधान हो वे सबका सेवक बने

१ तब यीशु ने भीड़ से और अपने चेलों से कहा, ११ जो तुम में बड़ा हो, वह तुम्हारा सेवक बने। १२ जो कोई अपने आपको बड़ा बनाएगा, वह छोटा किया जाएगा; और जो कोई अपने आपको छोटा बनाएगा, वह बड़ा किया जाएगा; और जो कोई अपने आपको छोटा बनाएगा, वह बड़ा किया जाएगा।

मत्ती. २५

३४ ततः परं राजा वदिष्यति स्वदक्षिणे स्थितान्, भो मत्पितुराशीर्वादभाजनान्यायत, दायवद् भुङ्क्त राज्यमुपकल्पितं युष्मदर्थमाज- गत्स्थापनात्। ३५ यतो मयि क्षुत्क्षामे यूयं मह्यं भक्ष्यम् अदत्त, तृषातुरे माम् अपाययत, ३६ अथितौ माम् अन्वगृह्णीत, विवस्त्रे मां वासांसि पर्य्यधापयत, अस्वस्थे मां पर्य्यपश्यत, कारानिहिते माम् अभ्यागच्छत।

भूखे, प्यासे, बेघर, नंगे, बीमार और कैदियों की सेवा

३१ जब मनुष्य का पुत्र अपनी महिमा में आएगा, और सब स्वर्गदूत उसके

साथ आएंगे तब वह अपनी महिमा के सिंहासन पर बैठेगा। ३२ सब जातियां उसके सामने उपस्थित की जाएंगी। जैसा चरवाहा भेड़ों को बकरियों से अलग करता है वैसा ही वह लोगों को एक-दूसरे से अलग करेगा। ३३ वह भेड़ों को अपनी दाहिनी ओर और बकरियों को बाईं ओर खड़ा करेगा। ३४ तब राजा अपनी दाहिनी ओर के लोगों से कहेगा, 'हे मेरे पिता के धन्य लोगो, आओ, इस राज्य के अधिकारी हो जाओ जो सृष्टि के आरंभ से तुम्हारे लिये तैयार किया गया है। ३५ क्योंकि मैं भूखा था, और तुम ने मुझे खाने को दिया। मैं प्यासा था, और तुम ने मुझे पानी पिलाया। में परदेशी था, और तुम ने मुझे अपने घर में ठहराया। ३६ मैं नंगा था, और तुम ने मुझे कपड़े पहिनाएं मैं बीमार था, ओर तुम ने मेरी सुधि ली। मैं बन्दीगृह में था, और तुम मुझ से मिलने आए।'

यूहन्ना १

१ आदौ वाद आसीत्, स च वाद ईश्वराभिमुख आसीत्, स च वाद ईश्वर आसीत्। २ स आदावीश्वराभिमुख आसीत्। ३ तेन सर्व्वमुद्भूतं, यद्यदुद्भूतं तन्मध्ये च तं विना न किमप्युद्भूतम्। ३ तस्मिन् जीवनमासीत्, तज्जीवनञ्च मनुष्याणां ज्योतिरासीत्। ४ तज्ज्योतिश्चान्धकारे राजतेऽन्धकारस्तु तन्न जग्राह।

प्रभु यीशु ही जीवन हैं

१ आदि में वचन था, और वचन परमेश्वर के साथ था, और वचन परमेश्वर था। २ यही आदि में परमेश्वर के साथ था। ३ सब कुछ उसी के द्वारा उत्पन्न हुआ है, उस में से कोई भी वस्तु उसके बिना उत्पन्न नहीं हुई। ४ उसमें जीवन था; और यह जीवन मनुष्यों की ज्योति था।

१२ यावन्तस्तु तं जगृहुस्तेभ्यः स तत् सामर्थ्यं ददौ येन त ईश्वरस्य सन्ताना भवन्ति यतस्तेऽमुष्य नाम्नि विश्वसन्ति। १३ न शोणितेभ्यो नापि वा मांसस्याभिलाषान्नापि वा पुरुषस्याभिलाषात् प्रत्युतेश्वरादेव ते जाताः।

परमेश्वर की संतान होने का अधिकार

१२ परन्तु जितनों ने उसे ग्रहण किया, उस ने उन्हें परमेश्वर की सन्तान होने का अधिकार दिया, अर्थात् उन्हें जो उसके नाम पर विश्वास करते हैं। १३ वे न तो रक्त से, न शरीर की इच्छा से, और न मनुष्य की इच्छा से उत्पन्न हुए हैं; परन्तु वे परमेश्वर से उत्पन्न हुए हैं। १४ वचन देहधारी हुआ। उस

ने अनुग्रह और सच्चाई से परिपूर्ण होकर हमारे बीच में निवास किया। हम ने उसकी ऐसी महिमा देखी, जैसी पिता के इकलौते पुत्र की महिमा।

यूहन्ना ३

३ यीशुः प्रतिभाषमाणस्तमब्रवीत्, सत्यं सत्यं, त्वामहं ब्रवीमि, पुनरादितो न जनित्वा मनुष्य ईश्वरस्य राज्यं द्रष्टुं न शन्कोति।

नया जन्म आवश्यक है

३ यीशु ने उसको उत्तर दिया, "मैं तुझ से सच-सच कहता हूं, यदि कोई मनुष्य नये सिरे से न जन्मे तो वह परमेश्वर का राज्य देख नहीं सकता।"

६ यन्मांसतो जातं तन्मासं, यदात्मतो जातं तदात्मा। ७ युष्माभिः पुनरादितो जनितव्यमिति मया त्वं यदुक्तस्तत्राश्चर्य्यं मा मन्यस्व।

'प्रभु यीशु पर विश्वास' मोक्ष प्राप्ति है

६ जो शरीर से जन्मा है, वह शरीर है और जो आत्म से जन्मा है, वह आत्मा है। ७ आश्चर्य न करो कि मैंने तुम से कहा कि तुम्हें नये सिरे से जन्म लेना आवश्यक है।

१५ तस्मिन् विश्वासी सर्ब्वमनुष्यो यथा न विनश्यानन्तं जीवनं लप्स्यते १६ यत इ श्वरो जगतीत्थं प्रेम चकार, यन्निजमेकजातं पुत्रं ददौ, तस्मिन् विश्वासी सर्व्वमनुष्यो यथा न विनश्यानन्तं जीवनं लप्स्यते। १७ ईश्वरो हि स्वपुत्रं जगति प्रहितवान् न जगतो विचारसाधनार्थ, प्रत्युत जगद् यत् तेन त्राणं लभेत तदर्थम्। १८ यस्तस्मिन् विश्वसिति तस्य विचारो न क्रियते। यो न विश्वसिति तस्य विचारः सम्भूतः यतः स ईश्वरस्यैकजातपुत्रस्य नाम्नि न विश्वसितवान्।

१६ "परमेश्वर ने संसार से ऐसा प्रेम किया कि उस ने अपना इकलौता पुत्र दे दिया ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नष्ट न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए। १७ "परमेश्वर ने अपने पुत्र को संसार में इसलिये नहीं भेजा कि वह संसार पर दण्ड की आज्ञा दे परन्तु इसलिये भेजा कि संसार उसके द्वारा जीवन पाए। १८ जो मनुष्य उस पर विश्वास करता है, उस पर दण्ड की आज्ञा नहीं होती। परन्तु जो मनुष्य उस पर विश्वास नहीं करता, वह दोषी ठहर चुका; क्योंकि उस ने परमेश्वर के इकलौते पुत्र के नाम पर विश्वास नहीं किया।"

३५ पिता पुत्रे प्रेम करोति, तस्य हस्ते सर्ब्बं समर्पयामास च। ३६ यः पुत्रे

विश्वसिति तस्यानन्तं जीवनमास्ते; यस्तु पुत्रं न श्रद्दधाति स जीवनं न द्रक्ष्यति प्रत्युतेश्वरस्य क्रोधस्तस्योपर्य्यवतिष्ठते।

संपूर्ण अधिकार प्रभु यीशु के पास हैं

३५ पिता पुत्र से प्रेम करता है, और उस ने सब वस्तुएं उसके हाथ में दे दी हैं। ३६ जो पुत्र पर विश्वास करता है, अनन्त जीवन उसका है। परन्तु जो पुत्र की बात नहीं मानता, वह जीवन को नहीं देखेगा, क्योंकि परमेश्वर का क्रोध उस पर बना रहता है।"

यूहन्ना ४

५ ततः स शमरियादेशस्यं शुखराभिधं नगरमायाति। पुरा या भूमि र्याकोबेन स्वपुत्राय योषेफाय दत्ता तन्नगरं तत्समीपस्थम्। ६ तत्र च याकोबस्य कूप आसीत्। अत यीशुः पथश्रान्तो भूत्वा तथैव तत्कूपान्तिकमुपविष्टवान्। ७ तदा प्रायेण षष्ठी घटिकासीत्। शमरीया काचिन्नारी तोयमुद्धर्तुमायाति। यीशुस्तां ब्रूते, मह्यं पानीयं देहि।

दलित स्त्री के हाथों पानी ग्रहण

५ वह सामरी प्रदेश के सूखार नामक एक नगर में आए। यह नगर उस भूमि के पास है, जिसे याकूब ने अपने पुत्र यूसुफ को दिया था। ६ याकूब का कुआं भी वहीं था। यीशु यात्रा के कारण थक गये थे इसलिये वह उस कुएं पर यों ही बैठ गए। यह दोपहर का समय था। ७ इतने में एक सामरी स्त्री कुएं पर जल भरने आई। यीशु ने उस से कहा, "मुझे पानी पिलाओ।"

९ ततः सा शमरीया नारी तं ब्रवीति, अहं शमरीया नारी, त्वञ्च यिहूदीयः, तत् कथं मां पानीयं याचसे? यतः शमरीयैः सह यिहूदीयानां व्यवहारो नास्ति। १० यीशुः प्रतिभाषमाणास्तामवादीत्, यदि त्वमी श्वरस्य दानमज्ञास्यः, मह्यं पानीयं देहीति येनोच्यसे तस्य तत्त्वञ्च यद्यज्ञास्यस्तर्हि त्वमेव तमयाचिष्यथाः, स च तुभ्यं जीवि तोयमदास्यत्।

जीवन का जल

९ सामरी स्त्री ने यीशु से कहा, "आप यहूदी होकर मुझ सामरी स्त्री से पानी क्यों मांग रहे हैं?" (क्योंकि यहूदी सामरियों के साथ किसी प्रकार का सम्बन्ध नहीं रखते हैं।) १० यीशु ने उत्तर दिया, "यदि तुम परमेश्वर के वरदान को जानतीं, और यह भी जानतीं कि वह कौन है जो मुझ से कह रहा

है, 'मुझे पानी पिला' तो तुम उस से मांगती, और वह तुम्हें जीवन का जल देता।"

१३ यीशुः प्रतिभाषमाणस्तामवादीत्, तोयमेतद् येन केनचित् पीयते स पुनः पिपासिष्यति, १४ मद्दातव्यं तोयन्तु येन पीयते, सोऽनन्तकालं यावन्न पिपासिष्यति, अति त्वहं तस्मै यत् तोयं दास्यामि तत् तस्यान्तरेऽनन्तं जीवनं यावदुत्प्लवमानस्य तोयस्योत्सो भविष्यति।

१३ यीशु ने उसको उत्तर दिया, "जो कोई यह जल पीएगा वह फिर प्यासा होगा। १४ परन्तु जो कोई उस जल में से पीएगा जो मैं उसे दूंगा, वह उस में एक झरना बन जाएगा जो अनन्त जीवन के लिए उमड़ता रहेगा।"

२३ प्रत्युत समयः स आयात्यधुना चास्ति यदा प्रकृता उपासका आत्मना सत्येन च पितुरुपासनं करिष्यन्ति, यतः पिता खोपासकांस्तादृशान् अनुसन्धत्ते। २४ ईश्वर आत्मा, यैश्च तस्योपासनं क्रियत आत्मना सत्येन चोपासनं तैः कर्त्तव्यम्। २५ सा स्त्री तं गदति, जानेऽहं मशीहेनार्थतः ख्रीष्टाभिधेन पुरुषेणागन्तव्यं, स यदायास्यति तदास्मभ्यं सर्व्वं निवेदयिष्यति। २६ यीशुस्तां ब्रवीति, त्वया सम्भाषमाणो योऽहं सोऽहमेव सोऽस्मि।

'आत्मा और सत्य' से भक्ति

२३ परन्तु वह समय आ रहा है, वरन् अब भी है जिसमें सच्चे भक्त पिता की आराधना आत्मा और सच्चाई से करेंगे, क्योंकि पिता अपने लिये ऐसे ही आराधना करनेवालों को ढूंढता है। २४ परमेश्वर आत्मा है, और अवश्य है कि उसकी आराधना करनेवाले आत्मा और सच्चाई से उसकी आराधना करें।" २५ स्त्री ने उस से कहा, "मैं जानती हूं कि मसीह जो 'ख्रीस्त' कहलाता है, आनेवाला है, जब वह आएगा तब हमें सब बातें बता देगा।" २६ यीशु ने उस से कहा, "मैं जो तुझ से बोल रहा हूँ, वही हूँ।"

प्रभु यीशु के पास मृत्यु और जीवन के अधिकार हैं

२० पिता पुत्र से प्रेम करता है और जो-जो काम वह स्वयं करता है, वह सब अपने पुत्र को दिखाता है। वह इन से भी बड़े काम उसे दिखाएगा ताकि तुम आश्चर्य करो। २१ जैसा पिता मरे हुओं को उठाता और जिलाता है, वैसा ही पुत्र भी जिन्हें चाहता है, उन्हें जिलाता है। २२ इसके अतिरिक्त पिता किसी का न्याय नहीं करता, परन्तु उस ने न्याय करने का सब काम पुत्र को सौंप दिया है। २३ ताकि सब लोग जैसे पिता का आदर करते हैं वैसे ही पुत्र का

भी आदर करें। जो पुत्र का आदर नहीं करता, वह पिता का, जिस ने उसे भेजा है, आदर नहीं करता। २४ "मैं तुम से सच कहता हूं, जो व्यक्ति मेरा वचन सुनकर मेरे भेजनेवाले पर विश्वास करता है, अनन्त जीवन उसका है। उस पर दण्ड की आज्ञा नहीं होती वह मृत्यु को पार कर जीवन में प्रवेश कर चुका है। २५ मैं तुम से सच कहता हूं, वह समय आ रहा है, और वह अब आ चुका है, जब मृत व्यक्ति परमेश्वर के पुत्र का शब्द सुनेंगे, और जो सुनेंगे, वे जीएंगे। २६ जैसे पिता अपने आप में जीवन रखता है, वैसे ही उस ने पुत्र को भी यह अधिकार दिया है कि अपने आप में जीवन रखे। २७ उस ने उसे न्याय करने का अधिकार दिया है, क्योंकि वह मनुष्य का पुत्र है। २८ "तुम यह सुनकर अचरज मत करो; क्योंकि वह समय आ रहा है, जब कब्र में पड़े हुए व्यक्ति उसका शब्द सुनेंगे, और बाहर निकलेंगे। २९ जिन्होंने भलाई की है, वे जीवन के पुनरुत्थान के लिए जी उठेंगे; और जिन्होंने बुराई की है, वे दण्ड के पुनरुत्थान के लिए जी उठेंगे।

यूहन्ना ६

३५ यीशुस्तु तानुवाच, अहमेव जीवनदायी खाद्यम् मत्समीपं य आगच्छति, स नैव क्षोत्स्यति, मयि यश्च विश्वसिति स कदापि न तर्षिष्यति।

जीवन की रोटी

३५ यीशु ने उन से कहा, "जीवन की रोटी मैं हूं, जो मेरे पास आएगा, वह कभी भूखा न होगा; और जो मुझ पर विश्वास करेगा, वह कभी प्यासा न होगा।

३७ पित्रं मह्यं यद्यद्दीयते सर्व्वं तन्मत्समीपमायास्यति। ३८ यश्च मत्समीपमायाति, स मया नैव वहि र्निक्षेप्स्यते। यतो न मदीयाभीष्टमपि तु मत्प्रेषयितुरभीष्टं कर्त्तुमहं स्वर्गादवतीर्णः। ३९ मत्प्रेषयितुः पितुरभीष्टञ्चदं यन्मह्यं तेन यद्यत् दत्तं तस्य किमपि। ४० मया न हारयितव्यमपि त्वन्तिमदिने सर्व्वं मयोत्थापयितव्यम्। मत्प्रेषयितुरभीष्टञ्चेदं यत् पुत्रं निरीक्ष्य यः कश्चित् तस्मिन् विश्वसिति, तेनानन्तं जीवनं प्राप्तव्यमन्तिमदिने च स मयोत्थापयितव्यः।

प्रभु यीशु मरे हुओं को जीवन देंगे

३७ जो कुछ पिता मुझे देता है, वह सब मेरे पास आएगा, और जो कोई मेरे पास आएगा उसे मैं कभी न निकालूंगा। ३८ क्योंकि मैं अपनी इच्छा नहीं

वरन् अपने भेजनेवाले की इच्छा पूरी करने के लिये स्वर्ग से उतरा हूं। ३९ मेरे भेजनेवाले की इच्छा यह है कि जो कुछ उस ने मुझे दिया है, उस में से मैं कुछ भी न खोऊं; परन्तु उन सब को अन्तिम दिन फिर जीवित कर दूं। ४० मेरे पिता की इच्छा यह है कि जो कोई पुत्र को देखे, और उस पर विश्वास करे, वह अनन्त जीवन पाए; और मैं उसे अन्तिम दिन फिर जीवित कर दूं।"

४४ अपरः कोऽपि मत्समीपमायातुं न शन्कोति, केवलं स यो मत्प्रेषयित्रा पित्राकृष्यते, स चान्तिमदिने मयोत्थापयिष्यते। ४५ भाववादिनां ग्रन्थे लिखिमास्ते, भविष्यन्ति हि ते सर्व्व ईश्वरेणैव शिक्षिताः। ४६ अतो यः कश्चित् पितुः सकाशाच्छ्रुत्वा शिक्षितवान्, स मत्समीपमायाति। ४७ कोऽपि यत् पितरं दृष्टवान्, न तथा ईश्वरस्य सकाशाद् योऽस्ति, केवलं स एव पितरं दृष्टवान्। ४७ सत्यं सत्यं युष्मानहं ब्रवीमि, मयि यो विश्वसिति, तस्यानन्तजीवनमास्ते। ४८ अहं जीवनदायी खाद्यम्।

प्रभु यीशु मार्ग हैं, परमेश्वर तक पहुँचने का

४४ कोई भी व्यक्ति मेरे पास नहीं आ सकता, जब तक पिता, जिस ने मुझे भेजा है, उसे खींच न ले। मैं उसको अन्तिम दिन फिर जीवित करूंगा। ४५ नबियों के लेखों में यह लिखा है कि 'वे सब परमेश्वर की ओर से सिखाए हुए होंगे'। जिस किसी ने पिता से सुना और सीखा है, वह मेरे पास आता है। ४६ यह नहीं कि किसी ने पिता को देखा है। परन्तु जो परमेश्वर की ओर से है, केवल उसी ने पिता को देखा है। ४७ मैं तुम से सच-सच कहता हूं, जो कोई विश्वास करता है, अनन्त जीवन उसी का है। ४८ जीवन की रोटी मैं हूं।

मेरा शरीर और लहू आत्मिक भोजन है

५० यह वह रोटी है जो स्वर्ग से उतरती है ताकि मनुष्य उसको खाए और न मरे। ५१ जीवन की रोटी, जो स्वर्ग से उतरती है, वह मैं हूं। यदि कोई मनुष्य इस रोटी को खाएगा तो वह सदा जीवित रहेगा। जो रोटी मैं जगत के जीवन के लिये दूंगा, वह मेरा मांस है।" ५२ यह सुनकर वे आपस में झगड़ने लगे कि यह मनुष्य किस प्रकार हमें अपना मांस खाने को दे सकता है। ५३ यीशु ने उन से कहा, "मैं तुम से सच-सच कहता हूं, जब तक तुम मनुष्य के पुत्र का मांस न खाओ, और उसका लोहू न पीओ, तुम में जीवन नहीं। ५४ जो मेरा मांस खाता और मेरा लोहू पीता है, अनन्त जीवन उसी का है,

और मैं अन्तिम दिन फिर उसे जीवित करूंगा। ५५ क्योंकि मेरा मांस वास्तव में खाने की वस्तु है और मेरा लोहू वास्तव में पीने की वस्तु है। ५६ जो मेरा मांस खाता और मेरा लोहू पीता है, वह मुझ में बना रहता है, और में उस में। ५७ जैसा जीवित पिता ने मुझे भेजा और मैं पिता के कारण जीवित हूं वैसा ही वह भी, जो मुझे खाएगा, मेरे कारण जीवित रहेगा। ५८ जो रोटी स्वर्ग से उतरी वह यही है। पूर्वजों के समान नहीं कि उन्होंने मन्ना खाया, और वे मर गए। किंतु जो कोई यह रोटी खाएगा, वह सदा जीवित रहेगा।"

यूहन्ना ७

३७ अथोत्सवस्यान्तिमदिवसेऽर्थतो महादिवसे यीशुस्तिष्ठन्नुच्चरवेण बभाषे, यः पिपासुः स मदन्तिकमागत्य पिबतु ३८ मयि यो विश्वसिति, शास्त्रीयोक्तयनुमारेण तस्यान्तरादमृततोयस्य सरितः प्रस्रविष्यन्ति।

जो प्यासा हो मेरे पास आये

३७ फिर पर्व के अन्तिम दिन जो पर्व का मुख्य दिन है, यीशु खड़े हुए और उन्होंने पुकारकर कहा, "यदि कोई प्यासा है तो वह मेरे पास आए और पीए। ३८ जो मुझ पर विश्वास करेगा, जैसा पवित्र शास्त्र में लिखा है, उसके हृदय से जीवन के जल की नदियां बह निकलेंगी।"

यूहन्ना ८

१० ततो यीशुरूद्धीभूय तां स्त्रियमृतेऽपरं कमपि न दृष्ट्वा च तां पप्रच्छ, नारि त्वदभियोगिनस्ते नराः क्व? त्वं किं केनापि न दण्डार्हीकृता? सावादीत, न केनापि प्रभो। ततो यीशुस्तामाह, अहमपि त्वां न दण्डार्हीकरोमि, याहि, पुनः पापं माकार्शीः।

पापिनी स्त्री का मृत्युदंड से छुटकारा

२ वह सबेरे फिर मन्दिर में आए। सब लोग उनके पास आए, और वह बैठकर उन्हें उपदेश देने लगे। ३ तब शास्त्री और फरीसी एक स्त्री को लाए। यह स्त्री व्यभिचार में पकड़ी गई थी। उन्होंने उसको बीच में खड़ा किया और यीशु से कहा, ४ "हे गुरु, यह स्त्री व्यभिचार करते हुए पकड़ी गई है। ५ धर्म-व्यवस्था में मूसा ने हमें आज्ञा दी है कि हम ऐसी स्त्रियों पर पत्थरवाह करें। आप इस स्त्री के विषय में क्या कहते हैं?" ६ उन्होंने यीशु को परखने

के लिए यह बात कही थी ताकि यीशु पर दोष लगाने के लिये कोई बात पाएं। परन्तु यीशु झुककर उंगली से भूमि पर लिखने लगे। ७ जब वे यीशु से पूछते ही रहे तब यीशु ने सीधे होकर उन से कहा, "तुम में जो निष्पाप हो, वही पुरुष सब से पहले इसको पत्थर मारे।" ८ वह फिर झुककर भूमि पर उंगली से लिखने लगे। ९ जब उन्होंने यीशु की यह बात सुनी तब बड़ों से लेकर छोटों तक, एक-एक करके चले गये। यीशु अकेले रह गए और स्त्री वहीं बीच में खड़ी रही। १० यीशु ने सीधे होकर उस से पूछा, "हे नारी, वे कहां गए? क्या किसी ने दण्ड की आज्ञा न दी?" ११ उस ने कहा, "हे प्रभु, किसी ने नहीं।" यीशु ने कहा, "मैं भी तुझे दण्ड की आज्ञा नहीं देता। जाओ, और फिर पाप न करना।"

१२ ततो यीशुः पुनः र्जनैः संलप्य बभाषे, अहं जगतो ज्योतिः, यो मामनुगच्छति स नैवान्धकारे व्रजिष्यत्यपि तु जीवनरूपमालोकं प्राप्स्यति। ३१ ततो ये यिहूदीयास्तस्मिन् व्यश्वसिषुस्तान् यीशु र्जगाद, यदि मम वाक्ये स्थिरा भवथ, ३२ तर्हि सत्यं यूयं मम शिष्याः स्थ, सत्यञ्च ज्ञास्यथ सत्येन स्वाधीनीकारिष्यध्वे च। ५१ सत्यं सत्यं, युष्मानहं ब्रवीमि, यः कश्चिन्मम वाक्यमनुपालयति, सोऽनन्तकालं यावन्मृत्युं न द्रक्ष्यति।

जगत की ज्योति में हूँ

१२ यीशु ने लोगों से कहा, "जगत की ज्योति मैं हूं। जो मेरे पीछे-पीछे आएगा, वह अन्धकार में नहीं चलेगा परन्तु जीवन की ज्योति पाएगा।" ३१ तब यीशु ने उन यहूदियों से जिन्होंने उन पर विश्वास किया था, यह कहा, "यदि तुम मेरे वचन में बने रहोगे तो तुम मेरे सच्चे शिष्य ठहरोगे। ३२ तब तुम सत्य को जानोगे, और सत्य तुम्हें स्वतंत्र करेगा।" ५१ मैं तुम से सच-सच कहता हूं, यदि कोई व्यक्ति मेरे वचन पर चलेगा तो वह अनन्तकाल तक मृत्यु को न देखेगा।"

यूहन्ना १०

अहं द्वारस्वरूपः ९ मया यः प्रविशति, स त्राणं लप्स्यते, स च प्रवेक्ष्यति निर्य्यास्यति च प्रचारमाप्स्यति च। १० चोरो नान्यकार्य्यार्थमायाति, केवलं चौर्य्यहत्याविनाशार्थमेव। मेषास्तु यथा जीवनम् अतिपूर्णताञ्च प्राप्नुयुस्तदर्थमहमागतः। ११ अहं स भद्रो मेषरक्षकः। भद्रो मेषरक्षको मेषाणां निमित्तं स्वप्राणांस्त्यजति।

द्वार में हूँ

७ तब यीशु ने उन से फिर कहा, "मैं तुम से सच-सच कहता हूं कि भेड़ों का द्वार मैं हूं। ८ जितने मुझ से पहले आए, वे सब चोर और डाकू थे। भेड़ों ने उनकी आवाज न सुनी। ९ द्वार मैं हूं। यदि कोई मेरे द्वारा भीतर प्रवेश करे तो वह उद्धार पाएगा और भीतर-बाहर आया-जाया करेगा और चारा पाएगा। १० चोर किसी और काम के लिये नहीं; परन्तु केवल चोरी करने, हत्या करने तथा नष्ट करने के लिए आता है। मैं इसलिये आया हूं कि जीवन पाएं, और बहुतायत से पाएं। ११ अच्छा चरवाहा मैं हूं। अच्छा चरवाहा भेड़ों के लिये अपना प्राण दे देता है।

१७ एतत्कारणान्मत्पिता मयि प्रेम करोति यातोऽहं मम प्राणांस्तथा त्यजामि यथा तान् पुन र्ग्रहीष्यामि। १८ नान्यः कोऽपि मत्तस्तानपहरति, स्वयमहंस्तांस्त्यजामि। तांस्त्यक्तुं मम सामर्थ्यमास्ते, पुनस्तान् ग्रहीतुमपि मम सामर्थ्य मास्ते। आदेशोऽयं मत्पितृतो मयालम्भि।

१२ "पिता मुझ से प्रेम करता है; क्योंकि मैं अपना प्राण देता हूं कि उसे फिर प्राप्त कर लूं। १८ कोई मेरे प्राण को मुझसे छीनता नहीं, वरन् मैं उसे स्वयं देता हूं। मुझे उसको देने का अधिकार है, और उसे फिर लेने का भी अधिकार है। यह आज्ञा मुझे मेरे पिता से मिली है।"

२७ अनन्तकालेऽपि ते नैव विनंक्ष्यन्ति, मम कराच्च कोऽपि तान् नापहरिष्यति। २८ ते मह्यं येन दत्ताः स मदीयपिता सर्व्वेभ्यो महत्तरः।

अच्छा चरवाहा में हूँ

२७ मेरी भेड़ें मेरी आवाज सुनती है; और मैं उन्हें जानता हूं। वे मेरे पीछे-पीछे चलती हैं। २८ मैं उन्हें अनन्त जीवन देता हूं। वे कभी नष्ट नहीं होंगी; और कोई उन्हें मेरे हाथ से नहीं छीन सकेगा।

यूहन्ना ११

लाज़र का जी उठना

१ लाज़र नामक एक मनुष्य बीमार था। वह मरियम और उसकी बहिन मार्था के गांव बैतनियाह का रहनेवाला था। १४ तब यीशु ने शिष्यों से साफ शब्दों में कहा, "लाज़र मर गया है। १५ किन्तु मैं तुम्हारे कारण आनन्दित हूं

कि मैं वहां नहीं था जिस से तुम विश्वास करो। अब आओ, हम उसके पास चलें।"

२१ मार्था तदा यीशुमवादीत्, प्रभो, भावन् यद्यत्रास्थास्यत्, तर्हि मम भ्राता नामरिष्यत्: २२ जाने त्वधुनापि भवान् ईश्वरं यद्यत् प्रार्थयिष्यते, तदीश्वरेण भवते दायिष्यते। यीशुस्तां ब्रूते, तव भ्राता पुनरुत्थास्यति। २३ मार्था तं ब्रूते, अन्तिमदिने पुनरुत्थाने स उत्थास्यतीति जाने। यीशुस्तामुवाच, अहं पुनरुत्थानं जीवनञ्च। २५ मयि यो विश्वसिति स मृत्वापि जीविष्यति, य: कश्चिच्च जीवति मयि विश्वसिति च, २६ सोऽनन्तकालेऽपि नैव मरिष्यति। २७ अत्र त्वं किं विश्वसिषि? सा तं ब्रवीति, तथैव, प्रभो। जगति येनागन्तव्यम् ईश्वरस्य पुत्र: सख्रीष्टो भवानेवेति विश्वासो मयाकारि।

२१ मार्था ने यीशु से कहा, "हे प्रभु, यदि आप यहां होते तो मेरा भाई कदापि न मरता। २२ अब भी मैं जानती हूं कि जो कुछ आप परमेश्वर से मांगेंगे, वह परमेश्वर आपको देगा।" २३ यीशु ने उस से कहा, "तुम्हारा भाई जी उठेगा।" २४ मार्था ने उन से कहा, "मैं जानती हूं कि अन्तिम दिन में पुनरुत्थान के समय वह जी उठेगा।" २५ यीशु ने उस से कहा, "पुनरुत्थान और जीवन मैं ही हूं। २६ जो कोई मुझ पर विश्वास करता है, यदि वह मर भी जाए तो भी वह जीएगा। और जो जीवित है, और मुझ पर विश्वास करता है, वह अनन्तकाल तक नहीं मरेगा। क्या तुम इस बात पर विश्वास करती हो?" २७ उसने यीशु से कहा, "हां, हे प्रभु, मैं विश्वास कर चुकी हूं कि परमेश्वर का पुत्र मसीह, जो जगत में आनेवाला था, वह आप ही हैं।" ३७ परन्तु यहूदियों में से कुछ ने कहा, "क्या यह जिन्होंने अन्धे की आंखें खोलीं, यह भी न कर सके कि वह मनुष्य लाज़र न मरता?" ३९ यीशु ने कहा, "पत्थर को हटाओ" मृत लाजर की बहिन मार्था ने यीशु से कहा, "हे प्रभु उस में से अब तो दुर्गन्ध आने लगी होगी; क्योंकि उसे मरे चार दिन हो गए हैं।" ४० यीशु ने उस से कहा, "क्या मैंने तुम से यह नहीं कहा था कि यदि तुम विश्वास करोगी तो परमेश्वर की महिमा को देखोगी?" ४१ तब लोगों ने उस पत्थर को हटाया। फिर यीशु ने आकाश की ओर आंखें उठाकर कहा, "हे पिता, मैं आपका धन्यवाद करता हूं कि आप ने मेरी प्रार्थना सुन ली है। ४२ मैं जानता था कि आप सदा मेरी प्रार्थना सुनते हैं। परन्तु जो भीड़ आस-पास खड़ी है, उसके कारण मैंने यह कहा है जिस से वे विश्वास करें कि आप ने मुझे भेजा है।" ४३ यह कहकर यीशु ने ऊंची आवाज में पुकारा, "लाज़र, निकल आ।"

४४ जो मर गया था, वह कब्र से बाहर निकल आया। उसके हाथ-पैर कफन में बंधे हुए थे। उसके मुंह पर अंगोछा लिपटा हुआ था। यीशु ने उन से कहा, "कफन को खोल दो और उसे जाने दो।"

यूहन्ना १२

२३ यीशुस्तु प्रतिभाषमाणस्तावदीत्, मनुष्यपुत्रस्य महिमप्राप्ते: समय उपस्थित: २४ सत्यं सत्यं, युवामहं ब्रवीमि, गोधूमबीजं चेन्न मृत्तिकायां पतित्वा म्रियते, तर्ह्येकं तिष्ठति, यदि तु म्रियते, तर्हि बहु फलं फलति। २५ य: स्वप्राणेषु प्रेम कुरुते, स तान् हारयिष्यति, यस्त्विहलोके तान् प्रति विरज्यते, सोऽनन्तजीवनाथ तान् रक्षिष्यति। २६ कश्चिन्मनुष्यो यदि मां परिचरितुं स्वीकरोति, तर्हि मामनुगच्छतु, तथा सत्यहं यत्रास्मि मम परिचारकोऽपि तत्रैव स्थास्यति। यश्च कश्चिन्मां परिचरति, मम पिता तं सम्मानयिष्यति।

मेरे सेवक बनने की शर्त

२३ यीशु ने उन से कहा, "वह समय आ गया है कि मनुष्य के पुत्र की महिमा हो। २४ मैं तुम से सच-सच कहता हूं कि जब तक गेहूं का दाना भूमि में पड़कर मर नहीं जाता, वह अकेला रहता है। परन्तु जब मर जाता है तब बहुत फल लाता है। २५ जो अपने प्राण को प्रिय जानता है, वह उसे खो देता है। और जो इस जगत में अपने प्राण को अप्रिय जानता है, वह अनन्त जीवन के लिये उसकी रक्षा करेगा। २६ यदि कोई मनुष्य मेरी सेवा करे तो वह मेरे पीछे हो ले। जहां मैं हूं, वहां मेरा सेवक भी होगा। यदि कोई मेरी सेवा करे तो पिता उसका आदर करेगा।"

प्रभु यीशु का लक्ष्य क्रूस की मृत्यु

२७ यीशु ने कहा, "अब मेरा जी व्याकुल हो रहा है। अब मैं क्या कहूँ? क्या यह कि 'हे पिता, मुझे इस घड़ी से बचा?' परन्तु मैं इसी कारण इस घड़ी को पहुंचा हूं। २८ हे पिता, अपने नाम की महिमा कीजिये।" तब यह आकाशवाणी हुई, "मैंने इसकी महिमा की है, और फिर भी करूंगा।"

४४ अपि तु यीशुरुच्चै:स्वरेण व्याहृतवान्, यो मयि विश्वसिति स न मयि विश्वसित्यपि तु मत्प्रेषयितरि। ४५ यश्च मां निरीक्षते स मत्प्रेषयितारम् निरीक्षते ४६ अहं ज्योति:स्वरूपो जगदागतवान्, य: कश्चिन्मयि विश्वसिति स यथा तिमिरे न स्थास्यति।

अंधकार में न रहे

४४ यीशु ने पुकारकर कहा, "जो मनुष्य मुझ पर विश्वास करता है, वह मुझ
पर नहीं वरन् मेरे भेजनेवाले पर विश्वास करता है। ४५ जो मनुष्य मुझे देखता
है, वह मेरे भेजनेवाले को देखता है। ४६ मैं संसार में ज्योति होकर आया हूं
ताकि जो कोई मुझ पर विश्वास करें, वह अन्धकार में न रहे।"

यूहन्ना १३

३ तदा सर्व्वं पित्रा मत्करयो: समर्पितम-हञ्चेश्वरसकाशादागत ईश्वर ४ समीपं
गन्तुमुद्यत श्चेति ज्ञात्वा यीशु र्भोज्यादुत्तस्थौ स्ववसनानि मोचयित्वा च
गात्रमार्ज्जनवस्त्रमादाय तेन स्वकटिं बवन्ध। ५ तत: परं प्रक्षालनपात्रे तोयं निधाय
शिष्याणां चरणान् प्रक्षालयितुं स्वकटौ निबद्धेन मार्ज्जनवस्त्रेण मार्ज्जयितुञ्चारेभे।

प्रभु यीशु शिष्यों के पाँव धोते हैं

१ फसह के पर्व से कुछ समय पहले की बात है। यीशु जानते थे कि समय
आ पहुंचा है, जब उनको संसार छोड़कर पिता के पास जाना होगा। वह अपने
लोगों से, जो जगत में थे, जैसा प्रेम वह करते थे, अन्त तक वैसा ही प्रेम करते
रहे। २ शाम का भोजन परोसा जा चुका था। शैतान शिमौन के पुत्र यहूदा
इस्करियोति के मन में यह बात डाल चुका था कि वह यीशु को पकड़वाए।
३ यीशु यह जानते थे कि पिता ने सब कुछ उनके हाथ में कर दिया है। वह
परमेश्वर के पास से आए थे, और अब परमेश्वर के पास जा रहे हैं। ४ इसलिये
वह भोजन पर से उठे उन्होंने अपने बाहरी कपड़े उतारे, और अंगोछा लेकर
अपनी कमर बांधी। ५ तब उन्होंने बर्तन में पानी भरा और वह शिष्यों के पांव
धोने ओर उस अंगोछे से पोंछने लगे, जो उनकी कमर में बंधा था।

१२ जब यीशु उनके पांव धो चुके तब उन्होंने अपने कपड़े पहिने और
अपने स्थान पर बैठ गये। यीशु ने उन से पूछा, "मैंने जो कार्य तुम्हारे साथ
किया, क्या तुम उसका अर्थ समझे? १३ तुम मुझे 'गुरु' और 'प्रभु' कहते हो,
और तुम ठीक कहते हो, क्योंकि मैं वही हूं। १४ यदि मैंने प्रभु और गुरु होकर
तुम्हारे पांव धोए तो तुम्हें भी एक दूसरे के पांव धोना चाहिए। १५ मैंने तुम्हारे
सामने एक आदर्श रखा है, कि जैसा मैंने तुम्हारे साथ किया है, वैसा ही तुम
भी किया करो। १६ मैं तुम से सच-सच कहता हूं, सेवक अपने स्वामी से
बड़ा नहीं होता है। १७ तुम तो ये बातें जानते हो। यदि तुम उन पर चलो तो
तुम धन्य हो।

३४ नवीनामेकामाज्ञां युष्मभ्यं ददामि, यद् युष्माभि: परस्परं प्रेम कर्त्तव्यम्। यथा
युष्मान् प्रति मयैतदर्थं प्रेमाकारि यद् यूयमपि परस्परं प्रेम करिष्यत। ३५ यदि
परस्परं प्रेमाचरथ, तर्ह्यनेन सर्व्वे ज्ञास्यन्ति यद्यूयं मम शिष्या इति।

प्रेम रखो जैसा मैंने तुमसे प्रेम किया है

३४ यीशु ने आगे कहा, "मैं तुम्हें एक नई आज्ञा देता हूं, एक दूसरे से प्रेम
करो। जैसा मैंने तुम से प्रेम किया है वैसा ही तुम भी एक दूसरे को प्रेम करो।
३५ यदि तुम आपस में प्रेम करोगे तो इसी से सब लोग जानेंगे कि तुम मेरे
शिष्य हो।"

यूहन्ना १४

१ युष्माकं हृदयं मैवोद्विजताम्, इश्वरे विश्वसित, मय्यपि विश्वसित। २ मम पितु
र्निकेतने बहवो वासा: सन्ति। नोचेद् युष्मभ्यमकथयिष्यम्। युष्मदर्थं हि स्थानं
सज्जीकर्तुं गच्छामि। ३ यदि च गत्वा युष्मदर्थं स्थानं सज्जीकरोमि, तर्हि पुनरागत्य
मत्समीपं युष्मान् ग्रहीष्यामि, यत्राहं वर्त्ते तत्र यूयमपि यथा वर्त्तिष्यध्वे।

तुम्हारा मन व्याकुल न हो

१ यीशु ने कहा, "तुम्हारा मन व्याकुल न हो। तुम परमेश्वर पर विश्वास करते
हो तो मुझ पर भी विश्वास करो। २ मेरे पिता के घर में बहुत से रहने के
स्थान हैं। यदि न होते तो मैं तुम से कह देता। मैं तुम्हारे लिये जगह तैयार
करने जा रहा हूं। ३ यदि मैं जाकर तुम्हारे लिए जगह तैयार करूं तो मैं फिर
आऊंगा, और तुम्हें अपने यहां ले आऊंगा, ताकि जहां मैं रहूं वहां तुम भी रहो।

६ यीशुस्तं वदति, अहमेव पन्था: सत्यञ्च जीवनञ्च, नान्येनोपायेन मनुष्य: पित:
समीपमायाति, केवलं मया। ७ माञ्चेदज्ञास्यत, तर्हि मत्पितरमप्यज्ञास्यत। अधुनारभ्य
च तं जानीथ, तं दृष्टवन्तश्च।

मार्ग, सत्य और जीवन में हूँ

६ यीशु ने उन से कहा, "मार्ग सच्चाई और जीवन मैं ही हूं। बिना मेरे द्वारा
कोई पिता के पास नहीं पहुंच सकता। ७ यदि तुम ने मुझे जाना होता तो मेरे
पिता को भी जानते। किंतु अब तुम उसे जानते हो, और उसे देखा भी है।"

१२ सत्यं सत्यं, युष्मानहं ब्रवीमि, मयि यो विश्वसिति, मया क्रियमाणानि कर्म्माणि
तेनापि कारिष्यन्ते, तेभ्यो महत्तराणि च कारिष्यन्ते, यतो हेतारहं मत्पितु: समीपं
गच्छामि, १३ युष्माभिश्च मम नाम्ना यत् किमपि प्रार्थयिष्यते तत् करिष्यामि, पुत्रे

पिता यथा महिमान्वितो भविष्यति। १४ यदि मम नाम्ना किञ्चन प्रार्थयध्वे तर्ह्यहं तत् करिष्यामि।

मेरे नाम से माँगो में पूरा करूँगा

१२ मैं तुम से सच-सच कहता हूं कि जो मनुष्य मुझ पर विश्वास करता है, वह भी ये काम करेगा, जो मैं करता हूं। वरन् वह इन से भी बड़े काम करेगा; क्योंकि मैं पिता के पास जा रहा हूं। १३ जो कुछ तुम मेरे नाम से मांगोगे, वही में करूंगा, ताकि पुत्र के द्वारा पिता की महिमा हो। १४ यदि तुम मुझ से, मेरे नाम से कुछ मांगोगे तो मैं उसे करूंगा।"

१५ यदि मां प्रति प्रेम कुरुथ, तर्हि ममाज्ञा अनुपालयत, १६ ततोऽहं पितरं याचिष्ये स च युष्मभ्यमन्यमेकं शान्तिकर्त्तारं। १७ दास्यति युष्माभिः सार्द्धं येन शाश्वतं स्थातव्यं, तं सत्यस्वरूपमात्मानं दास्यति यो जगता ग्रहीतुं न शक्यते, यतः स तेन न दृश्यते नापि वा ज्ञायते। युष्माभिस्तु स ज्ञायते, यतः स युष्मत्समीपमवतिष्टते युष्मदन्तश्च वर्त्तिष्यते। १८ न परित्यक्ष्यामि युष्मान् अनाथान अहं युष्मदन्तिकमागच्छामि। २० तस्मिन् दिने यूयं ज्ञास्यथ, यदहं मत्पितरि स्थितो यूयञ्चमयि स्थिता अहञ्च युष्मासु स्थितः।

मुझसे प्रेम करोगे तो मेरी आज्ञा मानोगे

१५ यीशु ने कहा, "यदि तुम मुझ से प्रेम करते हो तो तुम मेरी आज्ञाओं को मानोगे। १६ मैं पिता से प्रार्थना करूंगा, और वह तुम्हें एक 'सहायक' देगा, अर्थात् 'सत्य का आत्मा' ताकि वह सदा तुम्हारे साथ रहे। १७ संसार इस सहायक को ग्रहण नहीं कर सकता; क्योंकि वह न उसे देखता है और न उसे जानता है। तुम उसे जानते हो; क्योंकि वह तुम्हारे साथ रहता है, और वह तुम में होगा। १८ "मैं तुम्हें अनाथ न छोडूंगा, मैं तुम्हारे पास आऊंगा। २० उस दिन तुम जानोगे कि मैं अपने पिता में हूं, और तुम मुझ में और मैं तुम में। २१ "जिस मनुष्य के पास मेरी आज्ञाएं हैं, और वह उन्हें मानता है, वही मुझ से प्रेम करता है। जो मनुष्य मुझे से प्रेम करता है, उस से मेरा पिता प्रेम करेगा और मैं उस से प्रेम करूंगा, और स्वयं को उस पर प्रकट करूंगा।"

२३ यीशुः प्रतिभाषमाणास्तमाह, कश्चिद् यदि मां प्रति प्रेम करोति तर्हि मम वाक्यमनुपालयिष्यति, मम पिता च तं प्रति प्रेम करिष्यति, तत आवां तस्य समीपमागमिष्यावस्तेन सह करिष्यावश्च। यो मां प्रति प्रेम न करोति स मम वाक्यानि नानुपालयति। २६ शान्तिकर्त्ता त्वर्थतो मन्नाम्नि पित्रा प्रेषयितव्यः पवित्र आत्मा युष्मान् सर्व्वं शिक्षयिष्यति, मया युष्मभ्यं यद्यत् कथितं तत् सर्व्वं स्मारयिष्यति च।

अहं युस्मदर्थं दायमिव शान्तिं त्यजामि, मदीयशान्तिं युष्मभ्यं ददामि। जगद् तथा ददाति नाहं युष्मभ्यं तथा ददामि। युष्माकं हृदयं मैवोद्विजतां मैव वा भीरु भवतु।

अपनी शाँति तुम्हें देता हूँ

२३ यीशु ने उसको उत्तर दिया, 'यदि कोई मनुष्य मुझ से प्रेम करे तो वह मेरे वचन को मानेगा, और मेरा पिता उस से प्रेम करेगा, और हम उसके पास आएंगे, और उसके साथ निवास करेंगे। २६ "ये बातें मैंने तुम्हारे साथ रहते हुए तुम से कहीं। २६ परन्तु 'सहायक' अर्थात् पवित्र आत्मा जिसे पिता मेरे नाम से भेजेगा, वह तुम्हें सब बातें सिखाएगा, और जो कुछ मैंने तुम से कहा है, वह सब तुम्हें स्मरण कराएगा। २७ मैं तुम्हें शांति दिए जाता हूं। मैं अपनी शांति तुम्हें देता हूं। जैसे संसार देता है, वैसे मैं तुम्हें नहीं देता। तुम्हारा मन न घबराए और न तुम डरो।

यूहन्ना १५

४ मयि युष्माभिरवस्थीयतां, युष्मासु च मया यथा द्राक्षालतायामनवस्थाय शाखया स्वतः फलं फलितुं न शक्यते, तथा मय्यनवस्थाय युष्माभिरपि न शक्यते। ५ अहं लता, यूयं तच्छाखाः यो मय्यबतिष्टतेऽहञ्च यस्मिन्नवतिष्ठे, स बहूनि फलानि फलति यतो मत्तः पृथग् युष्माभिः किमपि कर्त्तुं न शक्यते।

मैं दाखलता हूँ तुम डालियाँ

४ तुम मुझ में बने रहो, और मैं तुम में। जैसे डाली यदि दाखलता में न बनी रहे, तो वह अपने आप नहीं फल सकती वैसे ही तुम भी, यदि मुझ में बने न रहो तो नहीं फल सकते। ५ "मैं दाखलता हूं, तुम डाली हो। जो मुझ में बना रहता है, और मैं उस में, वह बहुत फल देता है। मुझ से अलग होकर तुम कुछ भी नहीं कर सकते।

७ यूयं यदि मय्यवतिष्टध्वे मम बर्चांसि च युष्मास्ववतिष्ठन्ते तर्हि यद्यद् बाञ्छिष्यथ तत् प्रार्थयिष्यध्वे युष्मदर्थं तत् सेत्स्यति च।

जो चाहो माँगो तुम्हारे लिये हो जायेगा

७ यदि तुम मुझ में बने रहो, और मेरी बातें तुम में बनी रहें तो जो चाहो मांगो और वह तुम्हारे लिये हो जाएगा।

८ मम पितानेन महिमान्वितोऽभूत् यद् यूयं बहुत फलं फलथ मम शिष्या भविष्यथ च। ९ यथा मयि पित्रा प्रेमाकारि, तथा युष्मासु मया प्रेमाकारि। १० मम

प्रेमन्यवतिष्ठध्वम्। यदि ममाज्ञा अनुपालयथ तर्हि मम प्रेमन्यवस्थास्यध्वे, यथाहं मत्पितुराज्ञा अनुपालितवां स्तत्प्रेमन्यवतिष्ठे च।

मेरे प्रेम में बने रहो

८ मेरे पिता की महिमा इसी से होती है कि तुम बहुत फलवंत हो। तब ही तुम मेरे शिष्य ठहरोगे। ९ "जैसा पिता ने मुझ से प्रेम किया वैसा ही मैंने तुम से प्रेम किया। मेरे प्रेम में बने रहो। १० यदि तुम मेरी आज्ञाओं को मानोगे तो मेरे प्रेम में बने रहोगे, जैसा कि मैंने अपने पिता की आज्ञाओं को माना है, और उसके प्रेम में बना रहता हूं।

११ अहं युष्मभ्यमेतदर्थमिदं कथयामि यन्ममानन्दो युष्मास्ववस्थास्यते युष्माकमानन्दश्च सम्पूर्णो भविष्यति। १२ ममाज्ञेयं यद् युष्माभिः परस्परं तथा प्रेम कर्त्तव्यं यथा युष्मान् प्रति मया प्रेमाकारि। १३ स्वबन्धूनां निमित्तं प्राणत्यागान्महत्तरं प्रेम कस्यापि नास्ति।

११ मैंने ये बातें तुम से इसलिये कही हैं कि मेरा आनन्द तुम में बना रहे, और तुम्हारा आनन्द पूरा हो जाए। १२ मेरी आज्ञा यह है कि जैसा मैंने तुम से प्रेम किया, वैसा ही तुम भी एक दूसरे से प्रेम करो। १३ इस से महान प्रेम किसी का नहीं, कि कोई अपने मित्रों के लिये अपना प्राण दे।

१४ यूयं मया यद्यदादिश्यध्वे तत् सर्व्वं चेदाचरथ तर्हि यूयं मम बन्धवः। १५ नाहं पुन र्युष्मान् दासानित्यभिदधामि, यतः प्रभुना किं क्रियते दासस्तन्न जानाति। अपि तु युष्मान् बन्धून्त्यभिहितवान्, यतः पितुः सकाशान्मया यद्यदश्रावि तत् सर्व्वमहं युष्मान् ज्ञापितवान्। १६ न यूयं मां वरितवन्तः, प्रत्युताहं युष्मान् वरितवांस्तदर्थं नियुक्तवांश्च यद् यूयं गत्वा फलं फलिष्यथ, युष्मत्फलञ्च स्थास्यति, यथा मम नाम्ना पितरं यत् किमपि प्रार्थेयिष्यध्वे तत् तेन युष्मभ्यं दायिष्यते। १७ अहं युष्मानेतदर्थमिदमादिशामि, यद् यूयं परस्परं प्रेम करष्यिथ।

तुमने मुझे नहीं, पर मैंने तुम्हें चुना है

१४ जो कुछ मैं तुम्हें आज्ञा देता हूं, यदि तुम उसे करो तो तुम मेरे मित्र हो। १५ अब से मैं तुम्हें सेवक न कहूंगा; क्योंकि सेवक नहीं जानता कि उसका स्वामी क्या करता है परन्तु मैंने तुम्हें मित्र कहा है; क्योंकि मैंने जो बातें अपने पिता से सुनीं, वे सब तुम्हें बता दीं। १६ तुम ने मुझे नहीं चुना है; परन्तु मैंने तुम्हें चुना है कि तुम जाओ और फलवंत हो-तुम ऐसा फल दो जो सदा बना रहे। तब तुम मेरे नाम से जो कुछ पिता से मांगोगे, वह तुम्हें देगा। १७ इन बातों की आज्ञा मैं तुम्हें इसलिये दे रहा हूं कि तुम एक दूसरे से प्रेम करो।

यूहन्ना १६

२३ सत्यं सत्यं, यूष्मानहं ब्रवीमि, यूयं पितरं यद्यत् प्रार्थयिष्ध्वे मम नाम्ना स युष्मभ्यं तत् सर्व्वं दास्यति इतिपूर्व्वं यूयं मम नाम्ना किमपि न प्रार्थितवन्तः। २४ प्रार्थयध्वं तेन लप्स्यध्वे, युष्माकमानन्दो यथा सम्पूर्णो भविष्यति।

माँगो तो पाओगे

२३ उस दिन तुम मुझ से कुछ न पूछोगे। मैं तुम से सच-सच कहता हूं, यदि तुम पिता से कुछ मांगोगे, तो वह मेरे नाम से तुम्हें देगा। २४ अब तक तुम ने मेरे नाम से कुछ नहीं मांगा। मांगो तो पाओगे ताकि तुम्हारा आनन्द पूरा हो जाए।" २५ यीशु ने आगे कहा, "मैंने ये बातें तुम से दृष्टांतों में कही हैं। परन्तु वह समय आ रहा है कि मैं तुम से दृष्टातों में और फिर नहीं कहूंगा, परन्तु स्पष्ट शब्दो में तुम्हें पिता के विषय में बताऊंगा।

२६ उस दिन तुम मेरे नाम से मांगोगे। मैं तुम से यह नहीं कहता कि मैं तुम्हारे लिये पिता से बिनती करूंगा। २७ पिता तो आप ही तुम से प्रेम करता है, इसलिये कि तुम ने मुझ से प्रेम किया है, और यह भी कि तुम ने विश्वास किया, कि मैं पिता की ओर आया हूं।

२८ अहं पितुः सकाशान्निगत्य जगदायातः पुन र्जगत् त्यक्ता पितुः समीपं गच्छामि। ३३ सर्व्वमेतदहं युष्मभ्यमकथयं, यथा मयि युष्माकं शान्ति र्भविष्यति। जगति युष्माकं क्लेशो जायते, किन्त्वाश्वसित, पराजितं मया जगत्।

हिम्मत बाँधो, मैंने संसार को जीत लिया है

२८ मैं पिता से निकलकर संसार में आया हूं। अब संसार को छोड़कर फिर पिता के पास जा रहा हूं।" ३३ मैंने ये बातें तुम से इसलिये कही हैं कि तुम्हें मुझ में शांति मिले। संसार में तुम्हें क्लेश होता है, परन्तु ढ़ाढ़स बांधो, क्योंकि मैंने संसार को जीत लिया है।"

यूहन्ना १७

१ सर्व्वमेतत् कथयित्वा यीशुः स्वर्गं प्रत्यूर्द्धदृष्टिं कृत्वा बभाषे, पितः, समय उपस्थितः, तव पुत्रं महिमान्वितं कुरु, पुत्रोऽपि यथा त्वां महिमान्वितं करिष्यति। २ त्वं ह्येतदर्थं तस्मै याबतीयमर्त्त्यानां कर्तृत्वंदत्तवान् यत् तस्मै त्वया यद्यददायि तत्सर्व्वस्मै सोऽनन्तं जीवनं दास्यति। ३ अनन्तं जीवनन्त्विदं यत् त एकं सत्यमीश्वरं त्वां त्वत्प्रेरितं यीशु ख्रीष्टञ्च ज्ञास्यन्ति।

अनंत जीवन प्रभु यीशु को पहचानना है

१ यीशु ने ये बातें कहीं और अपनी आंखें आकाश की ओर उठाकर इस
प्रकार प्रार्थना की, "हे पिता, समय आ पहुंचा है। अपने पुत्र की महिमा कर
कि पुत्र भी आपकी महिमा करे। २ आप ने उसको सब प्राणियों पर अधि
कार दिया है ताकि उन सब को वह अनन्त जीवन दे जिन्हें आप ने उसको
दिया है। ३ अनन्त जीवन यह है कि वे आप-अद्वैत सच्चे परमेश्वर को और
यीशु मसीह को, जिसे आप ने भेजा है, जाने।

८ यतस्त्वं मह्यं यनि वाक्यानि दत्तवांस्तानि मया तेभ्यो दत्तानि, तैश्च तानि गृहीत्वा
सत्यमज्ञायि यदहं त्वत्सकाशन्निर्गत्यायातः। ते चात्र व्यश्वसिषु र्यत् त्वं मां प्रहितवान्।
तेषां निमित्तमहं याचे। नाहं जगतो निमित्तं याचे, किन्तु त्वया ये मह्यं दत्तास्तेषां
निमित्तं, यतस्ते तव। १० यद्यन्मम तत् सर्व्वं तव, तथा यद्यत् तव तन्मम। अहञ्च तेषु
महिमान्वितो जातः।

प्रभु यीशु ने परमेश्वर से मेल मिलाप कराया है

८ जो संदेश आप ने मुझे दिया था, वह मैंने उनको पहुंचा दिया और उन्होंने
उसको स्वीकार कर लिया। वे अब यह निश्चयपूर्वक जानते हैं कि मैं आपकी
ओर से निकला हूं। उन्होंने विश्वास कर लिया है कि आप ही ने मुझे भेजा
है। ९ मैं उनके लिये प्रार्थना करता हूं, संसार के लिये नहीं; परन्तु उन्हीं के
लिये जिन्हें आप ने मुझे दिया है; क्योंकि वे आपके हैं। १० जो कुछ मेरा है,
वह सब आपका है; और जो आपका है, वह मेरा है। इन से मेरी महिमा प्रकट
हुई है।

पिता इनकी रक्षा कर

११ मैं अब संसार में नहीं रहूंगा, परन्तु ये संसार में रहेंगे। मैं आपके पास आ
रहा हूं। हे पवित्र पिता, अपने उस नाम से जो आप ने मुझे दिया है, उनकी
रक्षा कीजिये कि वे हमारे समान एक हों। १२ जब मैं उनके साथ था तब मैंने
आपके उस नाम से, जो आप ने मुझे दिया है, उनकी रक्षा की, और उनको
बचाकर रखा और विनाश के पुत्र को छोड़ उन में से कोई भी नष्ट नहीं हुआ
जिस से पवित्र शास्त्र की बात पूरी हो। १३ "अब मैं आपके पास आ रहा
हूं। मैं ये बातें संसार में इसलिये कह रहा हूं, कि वे मेरे आनन्द को अपने
में पूरा-पूरा पाएं।

१४ अहं तेभ्यस्तव वाक्यं दत्तवान् जगच्च तान् अद्विषत्, यतोऽहं यथा न
जगत्सम्बन्धीयस्तथा तेऽपि न जगत्सम्बन्धीयाः। १५ ते त्वया जगतो वहि र्नीयन्तां
नाहमेतद् याचे, प्रत्युत ते त्वया दुरात्मतो रक्ष्यन्तामिति याचे। अहं यथा जगत्सम्बन्धीयो
नास्मि तेऽपि तथा जगत्सम्बन्धीया न सन्ति। १६ तव सत्येन तान् पवित्रीकुरु, तव
वाक्यमेव सत्यस्वरूपम्। १७ त्वं यथा मां जगति प्रहितवांस्तथाहमपि तान् जगति
प्रहितवान्।

ये संसार के नहीं हैं

१४ मैंने आपका वचन उन्हें पहुंचा दिया है, और संसार ने उन से बैर किया
है; क्योंकि जैसे मैं संसार का नहीं, वैसे ही वे भी संसार के नहीं हैं। १५ मैं
यह प्रार्थना नहीं करता कि आप उन्हें संसार से उठा लें, परन्तु यह कि आप
उन्हें उस दुष्ट शैतान से बचाकर रखें। १६ जैसे मैं संसार का नहीं वैसे ही
वे भी संसार के नहीं। १७ सत्य के द्वारा उन्हें पवित्र कीजिये। आपका वचन
सत्य है।

जहाँ में हूँ वहाँ वे भी मेरे साथ हों

२३ मैं उन में और आप मुझ में कि वे सिद्ध होकर एक हो जाएं, और संसार
जाने कि आप ही ने मुझे भेजा है। जैसा आप ने मुझ से प्रेम किया वैसा ही
उन से भी प्रेम किया। २४ "हे पिता, मैं चाहता हूं कि जिन्हें आप ने मुझे दिया
है, जहां मैं हूं वहां वे भी मेरे साथ हों कि वे मेरी उस महिमा को देखें
जो आप ने मुझे दी है; क्योंकि आप ने संसार की उत्पत्ति से पहले मुझ से
प्रेम किया।

५ स तु ता जगाद, मा क्षुभ्यत। यूयं क्रुशारोपितं नासरतीयं यीशुम्, अन्विष्यथ।
६ पुनरुत्थितः स नात्र विद्यते। पश्यतेदं तत् स्थानं यत्र स शायितः

मरकुस १६

प्रभु यीशु मृत्यु पर विजय प्राप्त करते हैं

२ सप्ताह के पहले दिन बड़ी भोर को जब सूरज निकला ही था, वे कब्र पर
आईं। ३ वे आपस में कह रहीं थीं, "हमारे लिये कब्र के मुंह पर से पत्थर
को कौन लुढ़काएगा?" ४ जब उन्होंने ऊपर देखा तब उन्हें दिखाई दिया
पत्थर लुढ़का हुआ है! वह पत्थर बहुत ही बड़ा था। ५ वे कब्र के भीतर गईं
तो उन्होंने एक युवक को श्वेत वस्त्र पहिने हुए दाहिनी ओर बैठे देखा। वे

बहुत चकित हुईं। ६ युवक ने उन से कहा, "चकित मत हो। तुम यीशु नासरी को, जो क्रूस पर चढ़ाये गये थे, ढूंढ़ रही हो वह जी उठे हैं। वह यहां नहीं हैं। देखो, यही वह स्थान है, जहां उन्होंने यीशु को रखा था।

१५ अपि च स तान् जगाद, यूयं कृत्सनं जगद् गत्वा कृत्स्नसृष्टे र्ज्ञानार्थं सुसंवादं घोषयत। १६ यो बिश्वस्य स्नापयिष्यते स तारयिष्यते, यस्तु न विश्वसिष्यति स विचारे दण्डपात्रं भविष्यति। १९ तैः संलपनात् परं प्रभुः स्वर्गमारोहित ईश्वरस्य दक्षिण उपबिष्टश्च।

प्रभु यीशु का स्वर्गारोहण

१५ यीशु ने उन से कहा, "तुम सारे जगत में जाकर सारी सृष्टि के लोगों में सुसमाचार प्रचार करो। १६ जो विश्वास करे और बपतिस्मा ले उसी का उद्धार होगा। परन्तु जो विश्वास न करेगा, वह दोषी ठहराया जाएगा। १९ प्रभु यीशु उन से बातें करने के बाद स्वर्ग पर उठा लिये गये, और परमेश्वर की दाहिनी ओर बैठ गये।

मोक्ष मुफ़्त क्यों?

यतः पापस्य वेतनं मरणं
किन्त्व अस्माकं प्रभुणा यीशु ख्रीष्टे अनंत जीवनम्
ईश्वर दत्तं दानम् आस्ते।

(पाप की मज़दूरी मृत्यु है किंतु हमारे प्रभु यीशु में 'मोक्ष' परम ईश्वर का वरदान है)

(बाइबलः रोमि. 6:23)

हर व्यक्ति मोक्ष की तलाश में है, वह ढूंढता है, दूर दूर यात्रा करता है, पहले तो ईश्वर को खोजा जाये, और फिर उससे मोक्ष मार्ग पूछें और उसे प्राप्त करें।

हर धर्म मोक्ष की आवश्यकता बताता है। मनुष्य के अंतःकरण की एक आवाज़ उसे एक आनेवाले कल से आगाह करती रहती है। मनुष्य संसार में आया है, और शरीर और संसार उसकी आखिरी मंज़िल नहीं है आत्मा यहाँ से निकलकर आगे जायेगी, और मिट्टी के तत्त्वों से बना यह शरीर मिट्टी में मिल जायेगा, यह तो सभी जानते हैं। तो फिर मुक्ति, उद्धार, मोक्ष या स्वर्ग प्राप्ति तो हर व्यक्ति की ज़रूरत है। अग्निवास या अनंत नरक में आत्मा की पीड़ा को तो कोई नहीं चाहता है इसलिये कल से भयभीत होकर हर व्यक्ति मोक्ष की कीमत देने की कोशिश कर रहा है।

1. क्या हो कीमत

अपनी छोटी नज़र और अल्पबुद्धि का प्रयोग कर अधिकांश मनुष्य एक कीमत देने का विचार करते हैं। कष्टभोग करते हैं। कर्मदान चढ़ाते हैं। ज्ञान और दर्शन से खोजते हैं। धर्मस्थलों में भटकते हैं।

मोक्ष प्राप्ति के लिये कीमत पूछते हैं। और फिर अपने साधन या जेब टटोलते हैं। धनी मनुष्य अधिक धन देकर मोक्ष की संतुष्टि चाहता है। गरीब धन न होने पर कर्मदान व श्रमदान देने को तैयार होता है।

धर्म के व्यापारी मोक्ष का सौदा कराने में बिचवई का काम करते हैं। दुःखी, भयभीत, निराश, हताश मोक्षखोजी जाल में फँस जाते हैं। धन लुट जाता है। श्रम थका देता है और एक झूठी सुरक्षा पाकर मनुष्य घर आ जाता है।

2. धन संपत्ति-दान से मोक्ष प्राप्ति नहीं:

क्या हम ईश्वर को कुछ दे सकते हैं? यह असंभव है। स्वर्गधाम और सर्वब्रह्मांड का बनाने वाला स्वयं ईश्वर है। जिसने सृष्टि बनाई है और मनुष्य की रचना भी की है। वह सर्व-सृष्टि का मालिक है। यदि हम कुछ उसे

सृष्टि से निकाल कर कीमत के रूप में दें तो वह न दान है न दक्षिणा है, और न कीमत है। क्योंकि वह सब कुछ पहले से ही परम ईश्वर का है। हमारी धन संपत्ति हम ने ईश्वर से प्राप्त की है। तो हम क्या दान दें? हम क्या कीमत दें?

3. परमेश्वर के महान ब्रह्मांड में, मनुष्य की निर्बलता को तो देखें

इस ब्रह्मांड में हमारी पृथ्वी एक धूल के कण के समान है। हमारा सूर्य हमसे दस लाख गुना बड़ा है। हमारे सूर्य से लाखों गुना बड़े सूर्य और भी हैं जो नक्षत्र या सितारे कहलाते हैं। करोड़ों सूर्यों के झुंड को गेलेक्सी या आकाशगंगा कहते हैं। और इस तरह की करोंड़ों गेलेक्सियाँ हम शक्तिशाली टेलिस्कोप से देख सकते हैं।

हमारी एक गेलेक्सी जिसका नाम 'मिल्की वे' है, उसके एक छोर से दूसरे छोर तक जाने के लिए 300,000 किलोमीटर प्रति सैकेंड जो प्रकाश की गति है, से 100,000 वर्ष लगेंगे, अंदाज़ लगाने के लिये इन करोड़ों गेलेक्सियों में से यदि आप दस गेलेक्सियों की यात्रा यदि 300,000 किलोमीटर प्रति सैकेंण्ड से करेंगे तो कम से कम एक करोड़ वर्ष लगेंगे।

इस भीमकाय ब्रह्मांण्ड को जिसे एक जीवित परम ईश्वर ने बनाया है, उसकी तुलना में हमारी अपनी पृथ्वी एक धूल के कण के समान है, और यदि इस तिनके को शक्तिशाली माइक्रोस्कोट से देखें तो इस तुलना में हम मनुष्य एक छोटे जीवाणु के समान शायद दिखाई देंगे।

और अब सवाल ये है, कि ये छोटा जीवाणु की तरह मनुष्य अपने घमंड और गर्व से इस असीमित सृष्टि के बनानेवाले कर्त्ता परम ईश्वर को अपने मोक्ष के लिये कुछ भौतिक वस्तु या धन, या प्रयास, या श्रम कीमत के रूप में देना चाहता है। इसको समझने के लिये एक उदाहरण लें, जैसे एक ध नी राजा जिसके पास करोड़ों टन सोना और हीरे जवाहरात हैं। और इस राजा को एक अपराधी नागरिक एक रुपया दान कर खुश करना चाहता है, या अपने अधर्म की कीमत के रूप में देना चाहता है। कैसा है ये तर्क? क्या इस रास्ते से मुक्ति की आशा है? आप मेरे साथ अवश्य सहमत होंगे, कि यह रास्ता मूर्खतापूर्ण है। और असंभव है।

प्रेम करनेवाला परम ईश्वर जीवित सृष्टिकर्त्ता है। उससे मिलन, पाप मोचन, संकट मोचन और आत्मा का मोक्ष कोई भौतिक वस्तु या दान-पुण्य या धन से नहीं खरीदा जा सकता है।

4. कर्म-दान से मोक्ष प्राप्ति नहीं

मात्र अच्छे कर्म से मोक्ष क्यों हासिल नहीं होता है? वो इसलिये कि पाप केवल कर्म ही से नहीं, पर हमारे विचारों और उद्देश्यों में बीज के रूप में छिपा हुआ हमारे मन और हृदय में बसा रहता है। हत्या पाप का बाहरी फल है, पर इसका छिपा हुआ बीज क्रोध है। जैसे बलात्कार पाप का बाहरी फल है पर इसके छिपे बीज कामुकता या वासना के गंदे विचार हृदय में हैं। चोरी पाप का बाहरी फल है, पर इसका बीज लालच के रूप में हृदय में है। तो परिणाम यह है, कि फल रूपी कर्मों के सुधार से या निवारण से, पाप का बीज छिपा हुआ जो हृदय और मन में है वह नहीं निकलता है। पापी विचार और उद्देश्य हमारे अंदर हमें पापी साबित करते रहते हैं।

इसलिये अच्छे कर्म करके अपनी कोशिश या गर्व से मोक्ष प्राप्त करना, एक गंदे बरतन का बस बाहर से साफ कर इस्तेमाल करना है, यह रास्ता संभव नहीं है। यह अंदर की बीमारी का बाहरी इलाज है।

ऊपर से तो हम अपने-अपने धर्म के चाहे वो कोई धर्म क्यों न हो, भक्त लगते हैं, अच्छे दिखते हैं, पर अंदर झूठ, अधर्म क्रोध और लालच से भरे हैं। यह हमारी बाहरी आँखों से तो हमें दिखाई नहीं देता है, पर परमेश्वर सब जानता है और देखता है।

5. संसारिक गुरु और ज्ञान दर्शन से मोक्ष प्राप्ति नहीं

बाईबल (यूहन्ना 3:13) में लिखा है "कोई स्वर्ग पर नहीं चढ़ा, बस केवल वही जो स्वर्ग से उतरा है (प्रभु यीशु)।"

यदि कोई सांसारिक मनुष्य अपने बुद्धि, ज्ञान, दर्शन, चमत्कार या तंत्रमंत्र से प्रभावित कर अपने पंथ में ले आये, तो इस मार्ग में न हमें पापमोचन मिलेगा न आत्मा का मोक्ष प्राप्त होगा। बस अंत मृत्यु और नरक लोक की अग्नि से मिलन होगा।

6. मोक्ष मुफ़्त है, स्वयं परम ईश्वर ने कीमत चुकाई है

परमेश्वर मनुष्य देह धारण कर संसार में आये हैं, बाईबल में यीशु जो परम ईश्वर पुत्र बन संसार में उतर आते हैं जो हमें परमेश्वर के सत्य मार्ग, ज्ञान और इच्छा को हम पर प्रगट करते हैं। मृत्यु के बलिदान के तीसरे दिन प्रभु यीशु पुनर्जीवित होते हैं। और चालीस दिन के बाद लोगों की भीड़ के देखते-देखते वे स्वर्ग की ओर चले जाते हैं। इस तरह प्रभु यीशु 'मार्ग, सत्य और जीवन' बन हमारे मोक्षदाता बनते हैं। बाईबल में लिखा है, कि आदि में

सर्वसृष्टि स्वयं प्रभु यीशु ने अपने वचन की शक्ति से ही करी थी, वे स्वयं सर्वशक्तिमान परम ईश्वर हैं।

मोक्ष की कीमत बस ईश्वर ही अदा कर सकते हैं। वह इसलिये कि बस उन्हें ही मोक्ष की कीमत मालूम है। और यह कीमत है– एक पवित्र पावन बलिदान। पवित्र इसलिये क्योंकि परमेश्वर पवित्र है। इसी कारण 'प्रभु यीशु' एकमात्र सत्य अवतार बने, शरीर धारण करे और क्रूस की मृत्यु द्वारा पवित्र खून बहाये, सर्वसिद्ध बलिदान हुये। और ईश्वर के प्रेम द्वारा मनुष्य के मोक्ष की कीमत अदा होती है।

परम ईश्वर के हिसाब में मोक्ष की कीमत, और पाप का दण्ड बराबर है। और मनुष्य के बदले में यह कीमत या यह दण्ड परम ईश्वर स्वयं उठाते हैं।

अपनी मृत्युवश संतान को बचाने के लिये एक प्रेमी पिता अपना स्वयं प्राणदान करता है। मृत्यु की दवा जीवन है। मोक्ष की कीमत प्राणदान, बलिदान है। प्राणदान का कारण प्रेम है।

प्रेम ही मुक्तिमार्ग निकालता है। प्रेम ही मोक्ष की कीमत निर्धारित करता है। प्रेम ही मोक्ष का दाम है, और यह मुफ्त है, हमारा प्रयास नहीं है। परमेश्वर का वरदान है। आज प्रभु यीशु स्वर्गलोक में विराजमान हैं। और आपके मोक्षमार्ग बनकर पापमोचन कर आत्मा के ईशमिलन कराने को तैयार हैं।

बाईबल में लिखा है: परम ईश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम किया, कि अपने प्रिय ईष पुत्र यीशु को दान स्वरूप दिया। ताकि जो कोई उन पर विश्वास करे वे नरक के अग्निकुंड में नष्ट न हों, पर आत्मा का अनंत मोक्षदान प्राप्त करें (बाइबल यूहन्ना 3:16)

7. मोक्ष प्रार्थना

प्रभु यीशु, मैं पापी मनुष्य हूँ। मैं विश्वास करता हूँ कि आपने मेरे पापों की, और मोक्ष की कीमत अपने पवित्र खून से अदा की है। मेरे पापों को क्षमा करें। अपनी आत्मा के द्वारा नया जीवन दें। और मुझे मोक्ष प्रदान करें।

स्वागत

प्रतिदिन चमत्कारी वचन पढ़ने के लिये आपका स्वागत है।

बाईबल में यशायाह 55:11 में जीवित परमेश्वर कहता है "मेरे मुँह से निकलनेवाला वचन व्यर्थ ठहरकर मेरे पास वापस न लौटेगा, परन्तु मेरी इच्छा पूरी करेगा और जिस काम के लिये मैंने उसको भेजा है, उसे पूरा करके ही लौटेगा।"

इस पुस्तक में मैंने जीवित ईश्वर के जीवित वचन लिखे हैं, जो ईश्वर के पुत्र प्रभु यीशु ने इस संसार में कहे।

प्रभु यीशु को स्वर्ग, पृथ्वी और अधोलोक के सारे अधिकार प्राप्त हैं, उसने कहा–आकाश और पृथ्वी टल जायेगी, पर मेरे मुँह से निकला वचन बिना पूरे हुए न लौटेगा।

प्रभु यीशु पर विश्वास करिये उस पर भरोसा रखिये और पापी जीवन से तौबा करिये।

प्रतिदिन विश्वास से इन वचनों का पाठ करिये। आपकी हर समस्या प्रभु यीशु के वचन द्वारा अपने आप दूर होती जायेगी।

पापों की क्षमा प्राप्त होगी बीमारियाँ दूर हो जायेंगी। भूतप्रेतों का अधिकार खत्म होगा। समाजिक व पारिवारिक समस्याओं का हल होगा। और सच्ची मानसिक शाँति मिलेगी।

प्रभु यीशु का विजयी जीवन पाइये।

प्रभु यीशु भक्त,

शिष्य थॉमसन

शिष्य थॉमसेन का परिचय

शिष्य थॉमसेन: शिष्य थॉमसेन का अधिकांश जीवन उत्तर भारत में बीता। स्वतंत्र रूप से सत्य की खोज करते हुए उन्होंने पाया कि सभी धर्म मनुष्य को मात्र एक नैतिक जीवन जीने तक ही प्रेरित करते हैं।

लेकिन इसके विपरीत मनुष्य की वास्तविक ज़रूरत कुछ नैतिक मूल्यों को जान लेना, और उनमें से कुछ पर अमल करना ही नहीं है। सत्य तो ये है कि यह जीवन हमारी आत्मा के लिए एक सनातन या अनंत आत्मिक जीवन का प्रारंभ है।

ईसाई धर्म का दिखावटी स्वरूप: सत्य की खोज ने उन्हें प्रभु यीशु मसीह के समक्ष ला खड़ा किया। लेकिन शीघ्र ही उन्होंने यह पहचान कि जो जीवन अधिकांश मसीहियों (ईसाईयों) का है, वो प्रभु यीशु मसीह की शिक्षाओं पर न तो वास्तव में आधारित है और ना ही उनका जीवन मसीह के जीवन से मेल खाता है।

इसके समाधान के रूप में क्या किया जाये?

क्या यह कि जीवित परमेश्वर के सत्य, अर्थात् उसके पुत्र प्रभु यीशु मसीह का तिरस्कार कर दिया जाये, उसके रास्ते को विदेशी धर्म समझा जाये.....? कदापि नहीं।

शिष्य थॉमसेन ने इसे चुनौती के रूप में लिया, व ईसाई वर्ग की नकली भक्ति और कपट का पर्दाफाश करना चालू लिया।

उन्होंने इस बात पर ज़ोर दिया कि वर्तमान मसीही विश्वास या धर्म का वह स्वरूप दिखाई नहीं दे रहा है, जो प्रभु यीशु मसीह के अनुयायियों का होना चाहिये। प्रभु यीशु मसीह पिता परमेश्वर के स्वर्गीय स्थान से मानव रूप धारण करके हमारे बीच आये थे। उन्होंने ईश्वरीय इच्छा से मानव जीवन बिताया, स्वर्गीय पिता परमेश्वर की इच्छा पूर्ण की, उन्होंने परमेश्वर, मनुष्य, जीवन, पाप व मोक्ष से संबंधित सत्य को हम पर प्रकट किया।

मनुष्य को ज्ञान हुआ कि किस तरह पाप मनुष्य के कर्म में नहीं पर हृदय में, विचारों में व उद्देश्यों में बीज के समान बसा रहता है। पाप के फलों को खत्म करने से लाभ नहीं होता, लेकिन जड़ को व बीज को निकालना ज़रूरी होता है।

नया धर्म नहीं: प्रभु यीशु मसीह नया धर्म चलाने नहीं, नया जीवन देने आये थे। उन्होंने बताया कि वे स्वयं ही जीवन, सत्य व मोक्ष के एकमात्र मार्ग हैं। क्योंकि केवल वे ही मनुष्य के पापों की कीमत अपने बलिदान से पूरा करते हैं। बाइबल कहती है, "मनुष्य के लिये पाप की मज़दूरी आत्मिक मृत्यु व सर्वनाश है।"

प्रभु यीशु मसीह मनुष्य को सनातन जीवन देने के लिये, स्वयं, क्रूस की मृत्यु सहते हैं और इसके चालीस दिन के पश्चात् लोगों के देखते-देखते उनका स्वर्गारोहण होता है।

धर्म परिवर्तन निरर्थक है: धर्म तो बाहरी दिखावा है, यदि अंत:करण में अधर्म है तब पैसे या धनशक्ति से, या सामाजिक दबावों से प्रेरित धर्म परिवर्तन झूठा है। ये जीवित परमेश्वर को स्वीकार्य नहीं है, हाँ यह मनुष्य को झूठा मानसिक संतोष दिलाने में समर्थ है, लेकिन आत्मा का मोक्ष व स्वर्गीय सनातन जीवन जो परमेश्वर के साथ संगती का है उसे प्रदान करने में पूरी तरह असफल है।

हमें धर्म परिवर्तन नहीं जीवन परिवर्तन चाहिये, वह जीवन जो परमेश्वर के पुत्र यीशु मसीह को मुक्तिदाता स्वीकार करने से प्राप्त होता है, पापों के पश्चात्ताप करने से मिलता है। परमेश्वर प्रेरित नया जीवन मनुष्य अपनी सामर्थ से या अपने धर्म के नियमों का पालन करके या रीति-रिवाजों और त्यौहारों को मना कर नहीं प्राप्त कर सकता है।

साँसारिक शारीरिक जीवन पाप का स्त्रोत है इसलिये बाइबल बताती है कि जब प्रभु यीशु मसीह की आत्मा हमारे अंदर निवास करती है, और जीवन जीती है, तभी हम प्रभु यीशु मसीह के नये जीवन को संसार में प्रगट कर सकते हैं। दिखावे के मसीही (ईसाई) जीवन को चुनौती देते हुऐ, आज शिष्य थॉमसेन सच्चा मसीही जीने का आह्वान करते हैं।

SHISHYASHRAM
[Registered under Indian Trust Act, 1882 Reg.no-2401]
305 D/A Sheeshmahal, Shalimar Bagh, New Delhi-88 *e-mail:* jawabjawab@yahoo.com